

मई 2015

# दादावाणी



“डॉटने से इंसान साफ नहीं कहता और कपट करता है।”

“किसी को दुःख देने का उपाय नहीं है, बल्कि उसे सुख देने का उपाय है।”

“तरछोड़ बदला लिए बगैर रहता नहीं है।”

“किसी के भी अहंकार को भग्न करके हम सुखी हो ही नहीं सकते, वरना यह खैर बाँधेगा! हमारा कल्याण नहीं होने देगा, बीच में आएगा।”

“आपके निमित्त से किसी को थोड़ा भी दुःख होता है, तो उसका असर आप पर ही पड़ेगा।”

“किसी भी जीवमात्र को कुछ भी प्रास पहुँचाना या दुःख देना, उससे पाप बंधता है।”

“लोगों का अहंकार दुभाने से वे आपसे जुदा हो जाते हैं।”

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : १० अंक : ७

अखंड क्रमांक : ११५

मई २०१५

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,  
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,  
पो.ओ.: अडालज,  
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

8155007500

**Printed & Published by**  
**Dimple Mehta on behalf of**  
**Mahavideh Foundation**

5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Owned by**

**Mahavideh Foundation**  
5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Printed at**

**Amba Offset**

Basement, Parshvanath  
Chambers, Nr.RBI,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Published at**

**Mahavideh Foundation**  
5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Total 36 pages including cover**

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**

**१५ साल**

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

**वार्षिक**

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम  
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## औरों को दुःख देना कितना जोखिमी ?

### संपादकीय

मनुष्य भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए अपनी सारी शक्ति, समय और सर्वस्व बरबाद कर देता है लेकिन सच्चा सुख क्या है, दुःख क्या है, दुःख का कारण क्या है और दुःखों से मुक्त होने का उपाय क्या है, इसका भान नहीं होने की वजह से उसकी दौड़-धूप का अंत नहीं आता। अंत में मार खाकर धर्म की ओर मुड़ता है। फिर धर्म में भी उसकी दौड़-धूप शुरू हो जाती है। इतना धर्म होने के बावजूद भी मनुष्य के जीवन में सच्ची सुख-शांति क्यों नहीं है? अध्यात्म की श्रेणी चढ़ने का दावा करनेवाले मुमुक्षुओं के जीवन में आनंद क्यों नहीं है?

इस कलिकाल (कलियुग) में ऐसे जटिल प्रश्नों का क्या कोई सही समाधान मिल सकता है? हाँ, ज़रूर! यदि परिणाम लक्ष्य दृष्टि विकसित कर सके तो आज के दुष्काल में अनेक परेशानियों और दुःखों का अंत आ सकता है।

प्रस्तुत अंक में ‘अन्यों को दिए गए दुःखों की’ बात करते-करते, उनके परिणाम और जोखिम क्या आएगा, उस ओर एक दृष्टि डाली है। कर्म के उदय से डिस्चार्ज तो सहज रूप से आते ही रहेंगे, लेकिन जब जगत् की वास्तविकता समझ में आएगी कि किस के आधार पर मैं इस संसार में बंधा हुआ हूँ? मेरे हर एक कदम पर कर्म के कौन से परिणाम आएँगे? कौन से जोखिम आएँगे? यदि यह समझ में आ जाए तो उसकी वापस मुड़ने की शुरुआत हो जाती है और अंदर खेद बरतता है। बस इस समझ की शुरुआत ही उसे आगे ले जाएगी।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं संसार में दुःख किस वजह से हैं? विज्ञान क्लियर नहीं है, इस वजह से। यदि एक बार उसका विज्ञान क्लियर हो जाएगा, तो फिर इस दुःख का स्वरूप क्या है, क्यों मुझे दुःख मिलता है, क्यों मैं औरों को दुःख दे देता हूँ, क्यों इसका अंत नहीं आता, कहाँ भूलावे में आ जाता हूँ, सुख के लिए सारी दौड़-धूप करता हूँ लेकिन फिर भी क्यों दुःख के किनारे से आगे नहीं जा पाता, इन सारे प्रश्नों के समाधान प्राप्त हो जाएँगे।

ज्ञानी कृपा से हमें शुद्धात्मा पद तो प्राप्त हो गया लेकिन जब तक व्यवहार शुद्ध नहीं होगा, तब तक मोक्ष नहीं मिलेगा। मोक्ष शुद्ध व्यवहार पर ही आधारित है। व्यवहार ऐसा आदर्श होना चाहिए कि जो किसी के भी लिए दुःखदाई नहीं बन जाए। निश्चय और व्यवहार, कहीं भी कमजोर न रह जाए। व्यवहार में कमजोर होंगे तो भूल कहलाएंगी। व्यवहार शुद्ध (चोखा)-निर्मल होना चाहिए। राग-द्वेष रहित, किसी को जरा सा भी दुःख नहीं हो जाए, ऐसा व्यवहार खुद के निश्चय को ही सहारा देगा और मोक्षमार्ग पूरा करवाएगा।

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री ने यही पारिणामिक समझ दी है कि किस प्रकार से किसी भी परिस्थिति में हम किसी के लिए दुःखदाई न बनें। और इसे समझ-समझकर महात्माओं के जीवन में कभी न कभी यह समझ अवश्य वर्तन में प्रवर्तित होगी, वही दिल की अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

औरों को दुःख देना कितना जोखिमी ?

अहंकार आहत होने के दुःख हैं संसार में

प्रश्नकर्ता : हम चाहे जितना करें, लेकिन सामनेवाला नहीं सुधरे तो क्या करें ?

दादाश्री : खुद सुधरे नहीं और लोगों को सुधारने गए, उससे लोग बल्कि बिगड़ गए। सुधारने जाए कि बिगड़ते हैं। खुद ही बिगड़ा हुआ हो तो क्या होगा ? खुद का सुधरना सब से आसान है ! हम नहीं सुधरे हों और दूसरों को सुधारने जाएँ, वह ‘मीनिंगलेस’ है। तब तक अपने शब्द भी वापस आएँगे। यदि आप कहो कि, ‘ऐसा मत करना।’ तब सामनेवाला कहेगा कि, ‘जाओ, हम तो ऐसा ही करेंगे!’ इससे तो सामनेवाला बल्कि अधिक उल्टा चला !

इसमें अहंकार की जरूरत ही नहीं है। अहंकार से सामनेवाले को डरा-धमकाकर काम करवाने जाएँ, तो सामनेवाला अधिक बिगड़ेगा। जिसमें अहंकार नहीं है, उसके प्रति हमेशा सभी ‘सिन्सियर’ रहते हैं और ‘मॉरेलिटी’ होती है। सच्चा व्यक्ति ‘मैं सच्चा हूँ,’ ऐसा करके सब को बहुत दुःख देता है। अर्थात् उसे लगी उसका दुःख नहीं है, अहंकार आहत होने से दुःख है।

अपना अहंकार नहीं होना चाहिए। अहंकार सभी को खटकता है। छोटे बच्चे को भी यदि ज़रा ‘बेअक्रल, मूर्ख, गधा’, कहा तो वह भी टेढ़ा चलता है। और कहें कि ‘बेटा, तू बहुत समझदार है’, तो वह तुरंत मान जाता है।

प्रश्नकर्ता : और उसे ‘बहुत समझदार’ कहेंगे तो भी वह बिगड़ जाएगा ?

दादाश्री : ‘मूर्ख’ कहेंगे तो भी बिगड़ जाएगा और ‘बहुत समझदार’ कहेंगे तो भी बिगड़ जाएगा। क्योंकि समझदार कहोगे तो ‘एन्करेजमेन्ट’ मिल जाएगा और ‘मूर्ख’ कहोगे तो उल्टा ‘साइकोलोजिकल इफेक्ट’ हो जाएगा। अक्रलमचद इंसान को २५-५० बार ‘मूर्ख’ कहोगे तो उसके मन में वहम हो जाएगा कि, ‘वास्तव में क्या मैं पागल हूँ?’ ऐसा करते-करते वह पागल हो जाएगा। इसलिए मैं पागल को भी, ‘तेरे जैसा समझदार इस जगत् में कोई नहीं,’ ऐसा कर-करके ‘एन्करेजमेन्ट’ देता हूँ। इस जगत् में हमेशा ‘पॉज़िटिव’ रहो। ‘नेगेटिव’ की तरफ मत चलना। ‘पॉज़िटिव’ का उपाय मिलेगा। मैं आपको ‘समझदार’ कहूँ और यदि आपका अहंकार आवश्यकता से अधिक चढ़ जाए, तो मुझे आपको चपत लगाना भी आता है, नहीं तो अगर वह उल्टे रास्ते चले और उसे ‘एन्करेज’ नहीं करें तो वह आगे बढ़ेगा ही नहीं।

जब से ऐसा जान लो कि ‘अहंकार नुकसानदायक है’ तब से सारा काम सरल हो जाएगा। अहंकार का रक्षण करने जैसा नहीं है। अहंकार खुद ही रक्षण कर ले, ऐसा है। यदि यह अहंकार नहीं होता तो दुनिया ऐसी पागल नहीं होती। अहंकार की वजह से दुःख हैं। काम करते रहने में हर्ज नहीं है लेकिन अहंकार बेकार के बवाल खड़े करता है।

**बोलने से पहले सोच लेना**

ये जो तार (सितार के) बजते हैं न, तो यदि एक ही तार को छेड़ो तो अंदर कितनी आवाज़ें आती हैं ?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत।

**दादाश्री :** एक को ही बजाओ तो भी ? इसी तरह यदि एक ही शब्द कहना हो तो अंदर कितने शब्द खड़े (उत्पन्न) हो जाते हैं। भगवान ने इसे 'अध्यवसन' कहा। अध्यवसन यानी (शब्दों) नहीं कहना चाहते, फिर भी वे खड़े हो जाते हैं। खुद को यदि कह देने का भाव हो जाए न, तो बोल अपने आप ही निकल जाते हैं। जितनी शक्ति हो वह (उतनी) सारी शक्ति आ जाती है, इच्छा नहीं होने के बावजूद भी, इतने सारे अध्यवसन खड़े हो जाते हैं कि कभी भी मोक्ष में न जाने दें। इसीलिए तो हमने अक्रम विज्ञान दिया, कितना सुंदर अक्रम विज्ञान है ! कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति इस पज़ल का अंत ले आए, ऐसा विज्ञान है।

'आप नालायक हो' ऐसा कहें न, तो ये शब्द सुनकर उसे तो दुःख हो ही गया, लेकिन इसके जो पर्याय खड़े होंगे, वे आपको बहुत दुःख देंगे और यदि आप कहो, 'बहुत अच्छे इंसान हो, आप बहुत भले इंसान हो' तो आपको अंदर शांति लगेगी। आपके कहे हुए शब्दों से उसे तो शांति हो गई और आपको भी शांति। यानी यहीं पर सावधानी रखने की ज़रूरत है न !

दुनिया में किसी को भी 'बेअक़ल' मत कहना। 'तू सयाना है' ऐसा ही कहना तो आपका काम होगा।

**प्रश्नकर्ता :** यदि पाँच मिनट तक हमने कुछ कठोर वाणी बोली तो उसके बाद के इफेक्ट दूसरे पचास मिनट खा जाते हैं।

**दादाश्री :** वे तो खा ही जाते हैं न। आप एक शब्द कहो कि, 'यह नालायक है' तो 'लायक' का वज़न एक रतल (२२७ ग्राम) होता है जबकि 'नालायक' का वज़न चालीस पाउंड होता है। 'लायक' कहो तो उसके स्पंदन बहुत कम होंगे, कम प्रभाव पड़ेगा और यदि 'नालायक' कहोगे तो चालीस पाउंड जैसा प्रभाव पड़ेगा। बोल बोलने के परिणाम !

**प्रश्नकर्ता :** यानी चालीस पाउंड का पेमेन्ट बाकी।

**दादाश्री :** और कोई चारा ही नहीं है न !

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर हम ब्रेक कैसे लगाएँ। इसका उपाय क्या है ?

**दादाश्री :** 'यह वाणी गलत है' ऐसा लगने से दिनोंदिन बदलाव आता जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** वह भी मशीनगन छूट जाने के बाद गलत लगती है।

**दादाश्री :** हाँ। लेकिन बाद में गलत तो लगती है न ? ऐसा करते-करते राह पर आ जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन पूरी तरह राह पर कब आएगा ?

**दादाश्री :** अरे ! गलत नहीं लगे तो अरबों जन्मों तक भी ठिकाना नहीं पड़ता और इससे तो थोड़े समय में ठिकाने आ जाएगा।

इसीलिए तो हम कहते हैं कि भाई, 'बोलते समय पुरुषार्थ में रहना चाहिए। बोलने से पहले सोचना चाहिए। और पुरुषार्थ तो है, आप पुरुषार्थ धर्म में आ चुके हो, ऐसे हो कि कुछ कर सको।'

**दुःखदाई वाणी का कारण ढूँढो**

**प्रश्नकर्ता :** वाणी ऐसी होने का कारण क्या है ?

## दादावाणी

**दादाश्री :** रौब डालने के लिए। दूसरों पर रौब पड़े न, इसलिए।

‘बोल’ (शब्द) एक ऐसी चीज़ है कि यदि इसे संभाल लिया तो सभी महाव्रत उसमें समा जाते हैं। किसी के ऊपर डालोगे तो वह सारी वाणी अंत में आप पर ही आती है। इसलिए ऐसी शुद्ध वाणी बोलो कि शुद्ध वाणी ही आपको मिले।

सामनेवाले को दुःख हो, यदि हम वैसी वाणी बोलें न, तब वह वाणी खुद ही परमाणुओं को खींचती है। उन परमाणुओं को दुःख का रंग लग जाता है। फिर वे परमाणु जब फल देने लगते हैं, तब दुःख ही देते हैं। बीच में किसी की कोई और मिलावट है ही नहीं।

### विनय रखें तो दुःख नहीं छूता

**दादाश्री :** किसी को दुःख हो जाए, ऐसी बात क्यों कहें ?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यदि वे गलत बोल रहे हों या गलत कर रहे हों तो भी हमें नहीं बोलना है ?

**दादाश्री :** बोलना है। ‘इस तरह नहीं हो तो अच्छा, ऐसा नहीं हो तो अच्छा’ हम ऐसा कह सकते हैं। लेकिन हम उनके बॉस(ऊपरी) हों, इस तरह बात करते हैं न, इसलिए बुरा लग जाता है। खराब शब्द भी उन्हें विनय से कहने चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** हाथ-पैर सलामत होने के बावजूद भी अगर भीख माँगे तो उसे दान देने से इन्कार करना क्या गुनाह है ?

**दादाश्री :** दान नहीं देते, उसमें हर्ज नहीं है लेकिन आप उसे कहो कि ‘ऐसा हट्टा-कट्टा भैसे जैसा होकर क्यों ऐसा करता है?’ तो ऐसा नहीं कहना चाहिए। आप कह दो कि ‘भाई, मैं नहीं दे पाऊँगा।’

सामनेवाले को दुःख हो, ऐसा हमें बोलना ही नहीं चाहिए। ऐसी अच्छी वाणी रखना कि सामनेवाले को सुख हो। वाणी तो सब से बड़ा धन है आपके पास। दूसरा धन तो टिके या न भी टिके, लेकिन वाणी-धन तो सदा के लिए टिकेगा। आप अच्छे शब्द बोलोगे तो सामनेवाले को आनंद होगा। आप उसे पैसे नहीं दो तो कोई हर्ज नहीं लेकिन अच्छे शब्द बोलो न!

यदि आप कहो कि, ‘हर कहीं माँगते फिरते हो? कैसे इंसान हो?’ ऐसा नहीं बोलना चाहिए। हर किसी को माँगने का वक्त आ सकता है, नहीं आता क्या? इसलिए विनयपूर्वक, उसे दुःख नहीं हो, इस तरह से कहना चाहिए।

### परम विनय की परिभाषा

परम विनय से मोक्ष है और परम विनय से इस संसार में भी बहुत सुखी हो जाओगे। सुखी होने के लिए इसके जैसा और कोई रास्ता ही नहीं है। परम विनय यानी क्या? किसी को हमसे किंचित्मात्र भी दुःख न हो, वही आपका परम विनय है। इस काल में किसी को भी दुःख मत देना। कोई आपको दुःख दे दे तो हमें जमा कर लेना है। वापस उसे देने की इच्छा नहीं है न?

**प्रश्नकर्ता :** ज़रा भी नहीं।

**दादाश्री :** वह तो फिर आप किसी और को दे दोगे। कोई कुछ दे तो उस समय आप वापस दे देते हो! क्योंकि स्वभाव थोड़े ही चला गया है? जागृति नहीं रह पाती न! मैंने जो कहा हो देने के बाद वह याद आता है, फिर आपको जो भूल हो गई उसका पश्चाताप करना पड़ेगा।

### अंत में गलत का अनुभव तो होगा ही

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन लोग ऐसा समझते नहीं हैं कि ‘जैसा देंगे वैसा बदला सामनेवाले से मिलेगा।’ लोग तो ‘बाद में देखा जाएगा’ ऐसा समझते हैं।

## दादावाणी

**दादाश्री :** लेकिन कभी तो उसे अनुभव होगा न? यदि आप कहें कि, 'अरे, यहाँ से मत जाना, यहाँ पर थोड़ी फिसलन है।' तब वह कहेगा, 'नहीं, मैं तो कहीं से भी जा सकता हूँ।' और फिर गिरता है। यदि एक बार कमर टूट जाए तो अपने आप ही ज्ञान आ जाएगा न!

यदि हम लोगों को दुःख देंगे तो उसके परिणाम स्वरूप हमें भी दुःख मिलेगा। लोगों को सुख देंगे तो आपको सुख मिलेगा। अब ये सुख और दुःख वे वास्तव में सुख-दुःख हैं ही नहीं, लेकिन फिर भी शांति है। यदि आप लोगों को शांति दोगे तो आपको भी शांति मिलेगी, अशांति दोगे तो अशांति मिलेगी। सिर्फ दो ही व्यापार हैं, और तीसरा व्यापार यदि शांति और अशांति से मुक्त होकर हमेशा के लिए मुक्त होना हो तो फिर रियल में आ जाओ। यदि आपको कभी कोई अशांति करवा दे तो आप उसे जमा कर लो। क्योंकि पहले दी होगी तभी वह दे जाएगा न! उसे जमा कर लेना और नई उसे मत देना और यदि शांति का ही व्यापार करेंगे तो आपको कभी भी अशांति नहीं मिलेगी। यदि आप सिर्फ सुख ही देते रहोगे तो फिर साल, दो साल, पाँच साल बाद सभी सुख देने की शुरुआत करेंगे। यदि आप किसी को दुःख नहीं दोगे तो आपके पास सारा सुख ही आएगा। लोग दुःख नहीं देते क्या?

**प्रश्नकर्ता :** देते हैं।

**दादाश्री :** क्योंकि आप उन्हें दुःख देते हैं तो वे दुःख देंगे ही न! यह व्यवहार है। अब जैसा व्यवहार आप रखोगे, वे भी वैसा ही व्यवहार रखेंगे। यदि आप सुख देने का व्यवहार रखोगे तो वे भी आपको सुख देंगे, आप दुःख देने का व्यवहार रखोगे तो दुःख देंगे, तो क्या देना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** सुख ही देना चाहिए।

**दादाश्री :** हाँ, यदि सभी सुख देने लगेंगे तो

फिर यह दुःख का झंझट ही खत्म हो जाएगा न! यदि मनुष्य नक्की कर ले तो सामनेवाले के लिए चक्कर लगाकर भी उसे सुख दे सकते हैं। पोस्ट से उसकी चिट्ठी ला दें, चिट्ठी पोस्ट कर दें, सब्जी लाकर दें तो भी सभी को सुख लगेगा।

## सोच को बदलना वह अपना पुरुषार्थ

दुश्मन के लिए भी खराब विचार न आए। दुश्मन के लिए भी, कैसे उसका कल्याण हो, ऐसा विचार आए। खराब विचार आना प्राकृतिक गुण है, लेकिन उसे पलटना अपना पुरुषार्थ है। आप समझ गए या नहीं समझे यह पुरुषार्थ की बात?

अहिंसक भाववाला यदि तीर मारे तो ज़रा भी खून नहीं निकलता और हिंसक भाववाला फूल डाले तब भी दूसरे को खून निकल आता है। तीर और फूल इतने इफेक्टिव नहीं हैं, जितनी इफेक्टिव भावना है। इसलिए हमारे एक-एक शब्द में 'किसी को दुःख न हो, किसी भी जीव मात्र को दुःख न हो' ऐसा भाव हमें निरंतर रहा करता है। जगत् के जीव मात्र को इस मन-वचन-काया से किंचित्मात्र भी दुःख न हो, उस भावना से ही 'हमारी' वाणी निकल रही होती है। कोई चीज़ काम नहीं करती, तीर काम नहीं करता, फूल काम नहीं करते, लेकिन भाव काम करते हैं।

## किसी के प्रति हथियार मत उठाना

यह 'अक्रम विज्ञान' तो क्या कहता है? मन से भी हथियार नहीं उठाना है, तो फिर लकड़ी कैसे उठा सकते हैं? इस दुनिया में कोई भी जीव, छोटे से छोटे जीव के लिए मैंने मन से कभी भी हथियार नहीं उठाया है, तो फिर और कुछ तो कैसे उठाऊँ? वाणी ज़रा सख्त निकल जाती है कभी, सालभर में एकाध दिन थोड़ी कड़क वाणी निकल जाती है। यह जैसे खादी और रेशम में फर्क होता है न, खादी कैसी होती है? वैसी थोड़ी

सख्त वाणी निकल जाती है कभी। बाकी वाणी से भी अटैक नहीं किया।

इस वर्ल्ड में कोई भी जीव, एक छोटा जीव हो, एक बिच्छू अभी काटकर गया हो, तब भी उस पर हथियार हमने उठाया नहीं! वह तो उसका फर्ज निभाकर जाता है। वह फर्ज नहीं निभाएगा तो हमारा छुटकारा नहीं होगा। इसलिए किसी भी जीव के साथ कभी भी मन से वार नहीं किया, इसका विश्वास है! अतः मानसिक हिंसा कभी भी नहीं की। नहीं तो मन का स्वभाव है, कुछ दिए बगैर रहता नहीं।

### जगत् से छूटने के लिए संपूर्ण भाव अहिंसा की ज़रूरत है

**प्रश्नकर्ता :** आप तो समझ गए होंगे कि इस हथियार का काम ही नहीं है।

**दादाश्री :** हाँ, हथियार काम का ही नहीं है। इस हथियार की ज़रूरत है, ऐसा विचार ही नहीं आया। जब से हमने (कषाय रूपी) तलवार ज़मीन पर रखी तब से उठाई नहीं। सामनेवाला शस्त्रधारी हो, तब भी हम शस्त्र धारण नहीं करते। और अंत में वही रास्ता अपनाना पड़ेगा। जिसे इस जगत् में से भाग छूटना है, अच्छा नहीं लगता, उसे अंत में यही रास्ता अपनाना पड़ेगा, दूसरा रास्ता नहीं है।

इसलिए यदि एक अहिंसा सिद्ध कर ले तो बहुत हो गया। क्रोध-मान-माया-लोभ ऐसे होने चाहिए कि अन्य किसी को भी दुःखदाई नहीं हों। अन्य किसी को भी दुःखदाई नहीं, खुद को ही दुःख देते रहें, इतनी लिमिट हो तब तक मोक्षमार्ग है।

### मानसिक चोट पर पट्टी भी नहीं लग सकती

संसार में लड़ाई-झगड़े की बात ही नहीं करनी चाहिए, वह तो रोग कहलाता है। लड़ना वह अहंकार

है, खुला अहंकार है। वह पगला अहंकार कहलाता है। मन में ऐसा मानता है कि 'मेरे बिना चलेगा नहीं।' किसी को डाँटने में तो अपने को उल्टा बोझा लगता है, निरा सिर पक जाता है। लड़ने का किसी को शौक होता होगा?

घर में सामनेवाला पूछे, सलाह माँगे तो ही जवाब देना चाहिए। यदि बिना पूछे सलाह देने बैठ जाए तो उसे भगवान ने 'अहंकार' कहा है। पति पूछे कि 'ये प्याले कहाँ रखने हैं?' तो पत्नी जवाब देती है कि 'फलाँ जगह पर रख दो।' तो आप वहाँ रख देना। अगर उसके बजाय पति कहे कि 'तुझमें अक्ल नहीं, तू कहाँ रखने को कह रही है?' उस पर पत्नी कहे कि 'अपनी अक्ल से रखो।' इसका कहाँ पार आए? यह संयोगों का टकराव है। इसलिए लट्टू (इंसान) खाते समय, उठते समय टकराया ही करते हैं। फिर लट्टू टकराते हैं, छिल जाते हैं और खून निकलता है। यह तो मानसिक खून निकलता है न! वो खून निकलता हो तब तो अच्छा, पट्टी लगाएँ तो रुक जाता है। इस मानसिक घाव पर तो कोई पट्टियाँ भी नहीं लगतीं।

### अहंकार के असर से खड़े हैं दुःख

डाँटने से इंसान साफ नहीं कहता और कपट करता है। डाँटने की वजह से ही जगत् में ये सारे कपट खड़े हुए हैं। डाँटना, वह सब से बड़ा अहंकार है। डाँटा हुआ काम का कब कहलाता है? जब बिना पूर्वग्रह से डाँटे तब।

कहीं तो अच्छी वाणी बोलते होंगे या नहीं बोलते हो? किसके साथ बोलते हो? जिन्हें बाँस (ऊपरी) मानते हैं, उनके साथ अच्छी वाणी बोलते हैं और अन्डरहैन्ड (आश्रित) को झिड़कते रहते हैं। पूरे दिन 'तूने ऐसा किया, तूने ऐसा किया,' कहते रहते हैं। तो उससे पूरी वाणी बिगड़ जाती है। इसके पीछे अहंकार है। जो कुछ भी कहते हैं, वह अहंकार

है। इस जगत् में कहने जैसा कुछ भी नहीं है। पूरा जगत् नियंत्रणवाला है।

हम डाँटे तो भी राग-द्वेष नहीं होते, इतना पक्का है! भगवान ने राग-द्वेष पर आपत्ति की है और सामनेवाले को दुःख हो जाए, ऐसा नहीं चलेगा। हमारे शब्दों से कुछ दुःख हो जाए, आपको ऐसा कुछ लगा है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** ये सब जो मैं बोलता (कहता) हूँ न उसके लिए एक बहन ने क्या कहा? 'दादा कठोर वाणी बोलते हैं लेकिन उसके पीछे जुनून नहीं है' आपको ऐसा समझ में आया कि, 'जुनून नहीं है?'

**प्रश्नकर्ता :** प्रेम है।

**दादाश्री :** हाँ। प्रेम है। जहाँ जुनून हो वहाँ सुनने की ज़रूरत ही नहीं है। जुनून तो खुला अहंकार है। हिंसकता में जुनून होता है और अहिंसकता में जुनून नहीं होता। हमारी वाणी कितनी भी कठोर हो लेकिन मन नहीं तोड़ देती।

### किसी भी जीव का अहम् मत दुभाना

किसी का अहंकार नहीं दुभे ऐसा रखना चाहिए। किसी का भी अहंकार नहीं दुभाना चाहिए। लोगों का अहंकार दुभाने से वे आपसे जुदा हो जाते हैं, फिर कभी आपको नहीं मिलते। आपको किसी से ऐसा नहीं कहना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, यह अहम् दुभे (आहत) यानी क्या है?

**दादाश्री :** अहम् दुभाना यानी क्या कि वह बेचारा कुछ बोलना चाहे और हम कहें, 'चुप बैठ, तू कुछ मत बोल।' ऐसे उसके अहंकार को दुभाना नहीं चाहिए। और काम-धंधे में अहम् दुभाना यानी उसमें वास्तव में अहम् नहीं दुभता, मन दुभता है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अहम् तो अच्छी चीज़ नहीं है, तो फिर उसे दुभाने में क्या हर्ज है?

**दादाश्री :** वह खुद ही अभी अहंकार स्वरूप है, इसलिए उसे नहीं दुभाना चाहिए। वह जो कुछ भी करता है, उसमें मैं ही करता हूँ, ऐसा वह मानता है। इसलिए नहीं दुभाना चाहिए। आप घर में भी किसी को नहीं (मत) डाँटना। 'तू यूज़लेस (निकम्मा) है, तू ऐसा है, वैसा है।' ऐसे किसी का मान भंग नहीं करना चाहिए। हाँ, डाँट सकते हैं, डाँटने में हर्ज नहीं है। कुछ भी हो लेकिन किसी का अहंकार नहीं दुभाना चाहिए। सिर पर प्रहार हो उसमें हर्ज नहीं लेकिन उसके अहंकार पर प्रहार नहीं होना चाहिए। किसी का अहंकार भग्न नहीं करना चाहिए। किसी के भी अहंकार को भग्न करके हम सुखी हो ही नहीं सकते, अहंकार तो उसका जीवन है!

मज़दूर का भी तिरस्कार नहीं करना चाहिए। तिरस्कार से उसका अहम् दुभेगा। हमें उसकी ज़रूरत नहीं हो तो उससे कहें कि 'भाई, अब मुझे तुझसे काम नहीं है' और यदि उसका अहंकार नहीं दुभता हो तो पैसे देकर भी उसे काम से फारिग कर देना चाहिए। पैसे तो आ जाएँगे लेकिन उसका अहम् नहीं दुभाना चाहिए। वर्ना वह बैर रखेगा, ज़बरदस्त बैर बाँधेगा! हमारा कल्याण नहीं होने देगा, बीच में आएगा।

### दुःख देकर किसी को भी सुधार नहीं सकते

**प्रश्नकर्ता :** मैं आपको उसी कमी की बात कहना चाहता था कि जब किसी की बिलीफ टूटती है, उस समय उसका अहम् दुःखी होता है?

**दादाश्री :** हमें यदि बिलीफ तोड़ना नहीं आए व उसे दुःख हो, तो नहीं तोड़नी चाहिए।

मैं बिलीफ ही तोड़ देता हूँ न? 'कि नहीं, आप चंदभाई नहीं हो।' तो ऐसे करते-करते उसकी बड़ी ज़बरदस्त कितने जन्मों की बिलीफ, वह भी



फ्रेक्चर होने लगती है। एक्जेक्टनेस होनी चाहिए, नहीं तो उसे बहुत दुःख होता है। भगवान के बारे में जो बिलीफ है, मैं वह तोड़ता हूँ। यानी अगर ऐसा कहूँ कि 'भगवान नहीं है' तो मारा गया। फिर उसे समझाना आना चाहिए कि 'किस प्रकार से नहीं हैं और किस प्रकार से हैं।' ऐसा सब होना चाहिए। और किसके लिए भगवान हैं और भगवान किसके लिए नहीं हैं। यों सब तरह से समझाता हूँ, उसके मन को ज़रा भी दुःख नहीं होना चाहिए। अपना एक भी हथियार नहीं लगना चाहिए। अपना हथियार अपने को लगे लेकिन उसे नहीं लगे, वह तुझे खास जान लेना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** उसे ऑपरेशन कहते हैं। थोड़ी-थोड़ी कमी हो तो निकाल देनी चाहिए। नई क्षमापना (क्षमा दिलवाना-करवाना) ले लेनी चाहिए। सामनेवाले मनुष्य को किंचित्मात्र दुःख नहीं होना चाहिए। ऐसा ध्येयपूर्वक का जीवन होना चाहिए।

हम दुःख देने के लिए नहीं आए हैं। कुछ हो सके तो (अन्यों को) सुख हो, वह अपना ध्येय है, या फिर (अपने से) किसी को दुःख नहीं होना चाहिए। नासमझी से, अपनी भूल से ही सामनेवाले को दुःख होता है। उसकी भूल से हो रहा हो, वह भी हमें नहीं होना चाहिए। उसकी भूल से, यानी वह भूलवाला है ही, उसे आप सुधारने निकले हो तो उसे दुःख दिए बगैर ही सुधारना चाहिए।

**अहंकार से दुःख हो जाता है**

राजा क्या कहते हैं कि 'मैंने लाखों लोगों को मार डाला।' राजा तो सिर्फ अहंकार ही करता है, गर्वरस लेता (चखता) है। उन्हें तो, जो लड़ाई कर रहे थे, उन्होंने मारा। राजा यों ही जोखिमदारी लेता है। मारा होता है सैनिकों ने लेकिन राजा कहता है कि 'मैंने मारा।' यों ही बोलता रहता है। ऐसे लोगों

को कैसा फल मिलता है? ऐसा करने से मारनेवाला छूट जाता है। नियम क्या है कि, जो अहंकार करता है, उसके सिर पर जोखिमदारी आती है। 'मैंने मारा' कहे, तब (कुदरत) कहेगी कि 'ले' (फल भुगत)। अब यह पूरा गुप्त तत्व लोग समझते नहीं हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** और जोखिमदारी के बारे में तो सोचते ही नहीं हैं।

**दादाश्री :** भान ही नहीं होता न! वे तो ऐसा ही समझते हैं कि 'ओहोहो! इस दुनिया में मेरी इज्जत बढ़ गई।' हाँ, एक ओर इज्जत तो बढ़ गई लेकिन उसका जो फल आएगा, वह भी सिर्फ तुझे ही भुगतना पड़ेगा। जो अहंकार करता है उसी को उसका फल मिलता है। होता है अपने आप! कर्म के उदय ने उसे राजा बनाया, लेकिन वह अहंकार करता है, 'मैंने किया।' कि मार पड़ेगी। किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो, ऐसा अहंकार होना चाहिए। वह 'पॉजिटिव' अहंकार है।

**कषाय ही खुद के दुश्मन**

खुद के कषाय ही खुद के दुश्मन हैं, बाहर दूसरा कोई दुश्मन है ही नहीं और वे कषाय ही उसे मार रहे हैं। बाहरवाला कोई उसे नहीं मारता। वास्तव में गुनहगार अपने कषाय हैं।

मनुष्यों को ये क्रोध-मान-माया-लोभ एक क्षण के लिए भी चैन से बैठने नहीं देते। निरंतर छटपटाहट, छटपटाहट, छटपटाहट! ऐसा आपने देखा है? यह मछली छटपटाती है क्या? पानी से बाहर निकलने पर मछली जैसे छटपटाती हैं, वैसे ही ये मनुष्य बाहर निकाले बिना ही छटपटाते हैं! घर में हों तो भी छटपटाहट, ऑफिस में जाएँ तो भी छटपटाहट, पूरा दिन छटपटाहट! अब यह छटपटाहट मिट जाए तो कितना आनंद रहेगा? देखो, हमारी छटपटाहट मिट गई है तो कैसी-कैसी बातें निकलती हैं न! पूरे जगत् को छटपटाहट, छटपटाहट, छटपटाहट

रहनेवाली है। इन्हें तो अच्छा भोजन हो तो भी खाते समय भी अंदर छटपटाहट बंद नहीं होती है। बोलो, किस तरह जी पाते हैं, वह भी आश्चर्य है न?

### बुद्धि से मारता है आज का मानव

इसलिए मैंने पुस्तक में लिखा है कि यह नई तरह का कीड़ा पैदा हुआ है, इसलिए सावधान रहना। क्योंकि किसी काल में बुद्धि से ऐसी लूट नहीं चलाई थी। बुद्धि यानी प्रकाश, यदि सामनेवाला व्यक्ति दुःखी हो रहा हो तो उसे प्रकाश दें, समझाएँ तो उसके लिए पैसे नहीं ऐंठते। आजकल तो बुद्धि से पैसे ऐंठते हैं। पहले जब अच्छा काल था तब अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से सभी की हेल्प (मदद) करते थे, प्रकाश देते थे।

आजकल तो भगवान के फॉलोअर्स (अनुयायी) ही बुद्धि से मार रहे हैं सभी को। और जो बुद्धि से मारते हैं, वे भगवान के सच्चे फॉलोअर्स नहीं हैं। बुद्धि प्रकाश है। वह औरों को फ्री ऑफ कॉस्ट (बिना मूल्य) देनी है। उसी बुद्धि से मारते हैं। ऐसा सुना है क्या कि, बुद्धि से मारते हैं? ज्यादा बुद्धिवाला, कम बुद्धिवाले का फायदा उठा लेता है, यह जानते हो आप?

**प्रश्नकर्ता :** हकीकत है। पहले से चला आ रहा है। अनादि काल से चला आ रहा है।

**दादाश्री :** भगवान (महावीर) के समय में ऐसा नहीं था। इन पच्चीस सौ वर्षों में ही यह सब हुआ है। बुद्धि से मारने के बजाय तलवार से मारा होता तो हर्ज नहीं था।

**प्रश्नकर्ता :** जिसके पास जो होगा उसी से मारेगा, बुद्धि होगी तो बुद्धि से मारेगा।

**दादाश्री :** नहीं। भगवान ने कहा है कि यदि तलवार से मारे तो कभी उसका *निकाल* (निपटारा) होगा और बुद्धि से मारे हुए का तो *निकाल* ही नहीं

होगा। क्योंकि हथियार का दुरुपयोग किया। तलवार तो मारने का हथियार है और बुद्धि तो प्रकाश देने के लिए है। उसके बजाय प्रकाश का दुरुपयोग किया, भयंकर, दुरुपयोग किया। इस जमाने में क्या कोई बुद्धि से दुरुपयोग करते होंगे?

**प्रश्नकर्ता :** करते होंगे।

**दादाश्री :** कम बुद्धिवाले से लाभ उठाते हैं या नहीं उठाते? ये व्यापारी किससे लाभ उठाते हैं? जो भोला हो उससे? जो चालाक होता है उससे फायदा उठाएँगे या भोले से उठाएँगे? सब भोले से ही उठाएँगे।

### बुद्धि से मारने का परिणाम क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नासमझी में कुछ हो जाए तो अलग बात है, लेकिन समझ होने के बावजूद भी करे तो बहुत ज़िम्मेदारी आएगी।

**दादाश्री :** इसीलिए हमने कहा कि 'यदि बुद्धि से मारोगे तो, ज्यादा बुद्धि से कम बुद्धिवाले का फायदा उठाओगे तो आठवें नर्क में जाना पड़ेगा।' सात ही नर्क थे लेकिन कुछ नए ही प्रकार का भुगतना पड़ेगा क्योंकि बुद्धि का दुरुपयोग पहले कभी किया ही नहीं था। यदि किसी काल में बुद्धि का दुरुपयोग हुआ हो तो वह इस कल में हुआ है। इसलिए हमें पुस्तक में लिखना पड़ा कि आठवें नर्क में जाना पड़ेगा।

बुद्धि से मार-मार किया न, इसलिए नई नर्कगति में जाना पड़ा। पहले बुद्धि से नहीं मारते थे, ऐसा बोलकर मारते थे कि 'मैं तुझे मारूँगा।' ये तो बुद्धि से मारते हैं और अपने आपको अहिंसक कहलवाते हैं। इसलिए इन लोगों के लिए पहली, दूसरी और तीसरी नर्कगति खुल गई है और वहाँ पर जगह भी बहुत सारी है, अनामत है, रिज़र्व है!

ये व्यापारी जो हैं, वे अधिक बुद्धिवाले कम

बुद्धिवाले को मारते ही रहते हैं। अधिक बुद्धिवाला तो, यदि कम बुद्धिवाला ग्राहक आए न तो उसके पास से लूट लेता है। कम बुद्धिवाले के पास से कुछ भी लूट लेना, भगवान ने उसे 'रौद्रध्यान' कहा है, और उसका फल 'ज़बरदस्त नर्क' कहा है। ऐसे बुद्धि का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

बुद्धि तो लाइट (प्रकाश) है। लाइट मतलब अंधेरे में जा रहे हों, उन्हें लाइट दिखाने के भी पैसे माँगते हो आप? अंधेरे में किसी व्यक्ति के पास छोटा सा फानूस हो, तो क्या हमें लाइट नहीं दिखानी चाहिए उस बेचारे को? बुद्धि से लोगों ने दुरुपयोग किया, वह हार्ड रौद्रध्यान, नर्क में जाने पर भी छूट नहीं सकेंगे। हार्ड रौद्रध्यान किसी काल में हुआ नहीं, वैसा इस पाँचवे आरे में चला है। बुद्धि से मारते हैं क्या? आप जानते हो?

लोगों ने तो इस बुद्धि का दुरुपयोग किया है। लोगों ने बुद्धि से गोलीबार किए हैं। कम बुद्धिवाले को गोलियाँ मारी। ज़्यादा बुद्धिवाले लोगों ने कम बुद्धिवाले पर गोलीबार किया। भगवान ने इसे 'आर्तध्यान' नहीं बल्कि 'अपध्यान' कहा है। ज़्यादा बुद्धिवाले ने कम बुद्धिवाले का फायदा उठाया, यानी उसे गोली मारी। किसी भी काल में बुद्धि से तो मारते ही नहीं थे। इसी काल में यह नया लफड़ा खड़ा हो गया है।

### बुद्धि से मारे, वह भयंकर गुनाह

बुद्धिशाली तो उसे कहते हैं कि कोई व्यक्ति उससे घबराए नहीं, उस तरह बुद्धि का उपयोग करता हो। और जहाँ पर दूसरा कोई घबरा जाता है, वहाँ पर कुबुद्धि है। उससे भयंकर पाप बंधते हैं। यानी कि बुद्धि के भाग तो समझने चाहिए न?

जो अपने घर में, व्यवसाय में, चाहे कहीं भी कम से कम टकराव खड़ा हो, इस प्रकार से व्यवहार करे, वह बुद्धिशाली कहलाता है।

वर्ना सामनेवाले को राजी रखने के लिए पंडिताई करे, वह एक प्रकार का 'ओवरवाइज़पन' है। बुद्धि से सामनेवाले को हेल्प होनी चाहिए।

हमसे घर पर किसी की हेल्प नहीं हो सके, मतभेद नहीं घटें, तो उस बुद्धि का क्या करना है? इस तरह बुद्धि से मारते हैं न, वह भयंकर गुनाह है। देखो, यह अभी भी छोड़ देंगे न और अभी तक का पछतावा कर लें और अब नये सिरे से नहीं करें, तो अभी भी अच्छा है। नहीं तो इसका कोई ठिकाना नहीं। वह गैरज़िम्मेदारी है। किसी को दुःख देना, वह नर्क जाने की निशानी है।

### दुःख देकर बाँधते हैं पाप की गठरी

यह जगत् जैसा है वैसा जाना नहीं है लोगों ने, इसलिए खुद को जैसा ठीक लगे वैसा बरतते हैं। अर्थात् किसी जीव को मारते हैं, किसी को दुःख देते हैं, किसी को त्रास पहुँचाते हैं।

किसी भी जीव मात्र को कोई भी त्रास पहुँचाना या दुःख देना, उससे पाप बंधता है। क्योंकि गॉड इज़ इन एवरी क्रीचर वेदर विज़िबल और इन्विज़िबल। (आँख से दिखें जैसे या नहीं दिखें जैसे, प्रत्येक जीव मात्र में भगवान हैं।) इस जगत् के लोग, हर एक जीव, वे भगवान स्वरूप ही हैं। ये पेड़ हैं, उनमें भी जीव है। अब लोग ऐसा भी कहते ज़रूर हैं लेकिन वास्तव में वैसा उनकी श्रद्धा में नहीं है। इसलिए पेड़ को काटते हैं। उन्हें यों ही ऐसे तोड़ते रहते हैं, यानी कि बहुत नुकसान करते हैं। जीवमात्र को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुँचाने से पाप बंधते हैं और किसी भी जीव को किसी भी प्रकार से सुख देने पर पुण्य बंधते हैं। आप बगीचे में पानी छिड़कते हो तो जीवों को सुख होता है या दुःख? वह जो सुख देते हो उससे पुण्य बंधता है। बस, इतना ही समझना है।

पूरे जगत् के जो धर्म हैं, उन्हें सार रूप में

यदि कहना हो तो एक ही बात समझा दें सभी को, कि यदि आपको सुख चाहिए तो दूसरे जीवों को सुख दो और दुःख चाहिए तो दुःख दो। जो अनुकूल हो वह करो, यह पुण्य और पाप कहलाता है। सुख चाहिए तो सुख दो, उससे क्रेडिट जमा होगा और दुःख चाहिए तो दुःख दो, उससे डेबिट जमा होगा। उनका फल आपको चखना पड़ेगा।

### पागलपन करके भी छूट जाना है

किसी को दुःख हो ऐसा शब्द बोलना भी गुनाह है। यदि बोल दिया हो तो आपको कहना है, 'भाई, मेरा दिमाग-विमाग कुछ खिसक गया है, इसलिए उल्टा-पुल्टा कुछ पैठ गया है। इसलिए ऐसा बोल दिया मतलब बुरा मत मानना।' ऐसा कहें न तो वह छोड़ देगा फिर, वरना वह छोड़ेगा ही नहीं।

मैं क्या कह रहा हूँ, वह समझे आप? पागल-जैसे बनकर छूट जाना। पत्नी भी ऐसा कहेगी, 'आप चक्कर छाप हैं' तो कहना, 'हाँ, सचमुच मेरा खिसक गया ही है, वरना ऐसा तो बोला जाता होगा मुझसे?' तब कहेगी, 'कोई हर्ज नहीं। लेकिन ऐसा बहुत झंझट मत करना।' मतलब यों बात को संभाल लेना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** यही मुख्य बात है न, बात को संभालने की जो कला है, वह आपसे सीखने को मिलती है।

**दादाश्री :** वह तो हम सिखाएँगे न। हम आपको सिखाएँगे। लेकिन 'मैं घनचक्कर हूँ' ऐसा कहना आना चाहिए न!

मैं तो हीरा बा को भी खुश कर दूँ, ऐसा कहकर। हीरा बा ऊपर से मुझे कहे, 'हं, आप तो बड़े अच्छे इंसान हैं, ऐसा क्यों कह रहे हैं?' ऐसा करके बात को संभाल लेना चाहिए। आपकी नीयत बुरी नहीं है। ऐसा करने में यदि आपको उससे

संसारी चीज़ हड़प लेनी हो तो गलत है। आपको तो उसका मन स्वच्छ करने हेतु बात संभालनी है। आपने जो पत्थर डाले हैं, वे पत्थर तो बैर बाँधेंगे।

### दुःख देने के प्रतिस्पंदन

इस जगत् में आप किसी को दुःख दोगे, तो उसका प्रतिस्पंदन आप पर पड़े बगैर रहेगा नहीं। स्त्री-पुरुष के तलाक लेने के बाद पुरुष फिर से विवाह करे, फिर भी उस स्त्री को दुःख रहे, तो उसके प्रतिस्पंदन उस पुरुष पर पड़े बगैर रहेंगे ही नहीं। और उसे वह हिसाब फिर से चुकाना पड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** ज़रा विस्तारपूर्वक समझाइए न!

**दादाश्री :** यह क्या कहना चाहते हैं कि जब तक आपके निमित्त से किसी को थोड़ा भी दुःख होता है, तो उसका असर आप पर ही पड़ेगा। और वह हिसाब आपको पूरा करना पड़ेगा, इसलिए सचेत रहो।

आप ऑफिस में यदि आसिस्टेंट को झिड़को तो उसका असर आप पर पड़े बगैर रहेगा या नहीं? पड़ेगा ही। बोलो अब, जगत् दुःख में से मुक्त किस तरह हो पाएगा? बच्चे को सुधारने जाओ, लेकिन इससे उसे दुःख हो जाए तो उसका असर आप पर पड़ेगा। इसलिए ऐसा कहो कि जिससे उस पर असर नहीं पड़े और वह सुधरे। तांबे में और काँच के बरतन में फर्क नहीं होता? आप तांबे के और काँच के बरतन को एक समझते हो? तांबे के बरतन में गड़्ढा पड़े तो निकाला जा सकता है। लेकिन काँच का तो टूट जाएगा। बच्चे की तो पूरी ज़िंदगी खत्म हो जाएगी।

इस अज्ञानता से ही मार पड़ती है। इसे सुधारने के लिए आप कहते हो, उसे सुधारने के लिए आप कहते हो, लेकिन कहने से उसे जो दुःख हुआ, उसका असर आप पर पड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** इस काल में बच्चों को तो कहना पड़ता है न?

**दादाश्री :** कहने में हर्ज नहीं है, लेकिन ऐसा कहो कि उसे दुःख नहीं हो और उसके प्रतिस्पंदन वापस आप पर नहीं आएँ। आपको तय कर लेना है कि मुझे किसी को किंचित्मात्र दुःख नहीं देना है।

### व्यवहार यानी एक-दूसरे को संतोष देना

व्यवहार मतलब क्या? दोनों को आमने-सामने संतोष होना चाहिए। व्यवहार से तो रहना पड़ेगा न? बहुत ऊँचे प्रकार का सुंदर व्यवहार आए तब 'शुद्ध उपयोग' रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** व्यवहार ऊँचा रखना हो तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** भावना रखनी चाहिए। लोगों का व्यवहार देखो, हमारा व्यवहार देखो। देखने से सब आ जाएगा। व्यवहार मतलब सामनेवाले को संतोष देना वह। व्यवहार को 'कट ऑफ' नहीं कर सकते। वह तो आत्महत्या की कहलाएगी। व्यवहार तो धीरे-धीरे खत्म होना चाहिए। यह विनाशी सत्य है, इसलिए छोड़ नहीं देना है। यह तो बेजिक अरेन्जमेन्ट है एक प्रकार का। इसलिए शादी भी करना, मेरी वाइफ है ऐसा भी कहना, वाइफ को ऐसा भी कहना कि, 'तेरे बिना मुझे अच्छा नहीं लगता।' वह तो कहना ही पड़ता है। ऐसा नहीं कहे तो गाड़ी किस तरह चले? हम भी अभी तक ऋषीरा बा से ऐसा कहते हैं कि, 'आप हो तब अच्छा लगता है। लेकिन हमसे यहाँ रहा नहीं जा सकता न, अब!'

**प्रश्नकर्ता :** निःस्वार्थ कपट!

**दादाश्री :** हाँ, निःस्वार्थ कपट! उसे ड्रामा कहा जाता है। दिस इज़ ड्रामेटिक! इसलिए यह हम

भी सारा अभिनय करते हैं आपके साथ। हम जो दिखते हैं न, जो बातें करते हैं, उस रूप हम नहीं हैं। यह तो सब आपके साथ अभिनय करते हैं, नाटक-ड्रामा करते हैं।

### वीतरागों की तत्त्व दृष्टि

वीतराग मार्ग में तो किसी का भी विरोध या तरछोड़ (तिरस्कार सहित दुत्कारना) नहीं होता। चोर, डाकू या बदमाश, वीतराग किसी के भी विराधक नहीं होते। उन्हें ऐसा कहे 'तू गलत धंधा लेकर बैठा है' तो उसे तरछोड़ लगेगी और तरछोड़ लगे वहाँ भगवान को नहीं देख सकते। भगवान तो इतना ही कहते हैं कि, 'उसे भी तू तत्त्व दृष्टि से देख। अवस्था दृष्टि से देखेगा तो तेरा ही बिगड़नेवाला है।' हम कीचड़ में पत्थर डालें तो? कीचड़ का क्या बिगड़नेवाला है? कीचड़ तो बिगड़ा हुआ ही है, छींटें हम पर ही उड़ेंगे। इसलिए वीतराग तो बहुत समझदार थे। जीव-मात्र को तरछोड़ नहीं लगे वैसे निकल जाते थे।

तरछोड़ सभी दरवाजे बंद कर देती है। जिसे हम तरछोड़ मारें, वह कभी भी दरवाजा खोलेगा ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** तिरस्कार और तरछोड़ हैं, वे जीवन व्यवहार में हर पल अनुभव में आते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, हर एक को यही हो रहा है न? जगत् में दुःख ही उसके हैं। उल्टी वाणी तो ऐसी निकलती है, 'अकाल पड़े' ऐसा बोलता है!

**प्रश्नकर्ता :** उल्टी वाणी के तो आजकल राजा होते हैं।

**दादाश्री :** हमें पिछले जन्मों का दिखता है, तब आश्चर्य होता है कि ओहोहो! तरछोड़ का कितना अधिक नुकसान है! इसलिए मजदूरों को भी तरछोड़ नहीं लगे, उस प्रकार आचरण करते हैं। अंत में साँप

होकर भी काटते हैं, तरछोड़ बदला लिए बगैर रहता नहीं है।

बाहर के घाव तो भर जाएँगे, लेकिन वाणी के घाव तो पूरी ज़िंदगी नहीं भरते। अरे, कुछ घाव तो सौ-सौ जन्मों तक नहीं भरते हैं!

**प्रश्नकर्ता :** जान-बुझकर किए हुए गुनाहों का दोष कितना लगता है? और अंजाने में की हुई भूलों का दोष कितना लगता होगा? अंजाने में की हुई भूलों के लिए माफी मिलती होगी न?

**दादाश्री :** कोई कुछ ऐसे पागल नहीं हैं कि यों ही माफ कर दे। आपसे अंजाने में कोई व्यक्ति मर गया। कोई कुछ बेकार नहीं बैठा कि माफ करने आए। अब अंजाने में अंगारों में हाथ पड़े तो क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** जल जाएँगे।

**दादाश्री :** तुरंत फल! अंजाने में करो या जान-बुझकर करो। इसीलिए सोच-समझकर करना यह सब। जो करोगे न, वह ज़िम्मेदारी खुद की ही है। यू आर होल एन्ड सोल रिस्पॉन्सिबल, गॉड इज़ नोट रिस्पॉन्सिबल एट ऑल। (आप ही संपूर्ण ज़िम्मेदार हो, भगवान बिल्कुल भी ज़िम्मेदार नहीं हैं।)

### इस काल में सिर्फ मनुष्य ही दुःखी

कुछ दुःख जैसा है ही नहीं और जो है वे नासमझी के दुःख हैं। इस दुनिया में कितने सारे जीव हैं! असंख्य जीव हैं! लेकिन किसी की पुकार नहीं है कि हमारे यहाँ अकाल पड़ा है! और ये मूर्ख हर साल शोर मचाया करते हैं! इस समुद्र में कोई जीव भूखा मर गया हो, ऐसा है? ये कौए वगैरह भूखे मर जाएँ, क्या ऐसा है? ना, वे भूख से नहीं मरनेवाले। वह तो कहीं टकरा गए हों, एक्सिडेंट हो गया हो, या फिर आयुष्य पूरा हो

गया हो, तब मरते हैं। कोई कौआ आपको दुःखी दिखा है? कोई सूखकर दुबला हो गया हो, ऐसा कौआ देखा है आपने? इन कुत्तों को कभी नींद की गोलियाँ खानी पड़ती हैं? वे तो कितने आराम से सो जाते हैं! ये अभागे ही सोने के लिए बीस-बीस गोलियाँ खाते हैं! नींद तो कुदरत की भेंट है। नींद में तो सचमुच का आनंद होता है! और ये डॉक्टर तो बेहोश होने की दवाईयाँ देते हैं। गोलियाँ खाकर बेहोश होना, वह तो शराब पीते हैं, उसके जैसा है। कोई ब्लड प्रेशरवाला कौआ देखा है आपने? यह मनुष्य नाम का जीव अकेला ही दुःखी है। इस मनुष्य अकेले को ही कॉलेज की ज़रूरत है।

ये चिड़ियाँ सुंदर घोंसला बनाती हैं, तो उन्हें कौन सिखाने गया था? ये संसार चलाना तो अपने आप ही आ जाए, ऐसा है। हाँ, 'स्वरूप ज्ञान' प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करने की ज़रूरत है। संसार को चलाने के लिए कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। ये मनुष्य अकेले ही ज़रूरत से ज्यादा अक्लवाले हैं। इन पशु-पक्षियों के क्या बीवी-बच्चे नहीं हैं? उन्हें शादी करवानी पड़ती है? यह तो, मनुष्यों के ही पत्नी-बच्चे हुए हैं। मनुष्य ही शादी करवाने में पड़े हुए हैं, पैसे इकट्ठे करने में पड़े हुए हैं। अरे, आत्मा जानने के पीछे मेहनत कर न! दूसरे किसी के लिए मेहनत-मज़दूरी करने जैसी है ही नहीं। अभी तक जो कुछ किया है, वह दुःख मनाने जैसा किया है। इन बच्चों को चोरी करना कौन सिखाता है? सब बीज में ही मौजूद है। यह नीम हर एक पत्ते में कड़वा क्यों है? उसके बीज में ही कड़वाहट मौजूद है। ये मनुष्य अकेले ही दुःखी-दुःखी हैं, संसार में दुःख किस वजह से हैं? 'विज्ञान क्लियर' नहीं हैं, उस वजह से।

### अंतःस्करण पर घर्षण-संघर्षण की चोट

सारी आत्मशक्ति यदि खत्म होती हो, तो वह

घर्षण से। ज़रा भी टकराए तो खत्म। सामनेवाला टकराए, तब हमें संयमपूर्वक रहना चाहिए। टकराव तो होना ही नहीं चाहिए। फिर चाहे यह देह भी जानी हो तो जाए, लेकिन टकराव में नहीं आना चाहिए। यदि सिर्फ घर्षण न हो, तो मनुष्य मोक्ष में चला जाए। किसी ने इतना ही सीख लिया कि 'मुझे घर्षण में नहीं आना है', तो फिर उसे गुरु की या किसी की भी ज़रूरत नहीं है। एक या दो जन्मों में सीधे मोक्ष में जाएगा। 'घर्षण में आना ही नहीं है' ऐसा यदि उसकी श्रद्धा में बैठ गया और निश्चय ही कर लिया, तब से ही वह समकित हो गया! अर्थात् यदि किसी को समकित करना हो तो हम गारन्टी देते हैं कि जाओ, घर्षण नहीं करने का निश्चय कर लो, तभी से समकित हो जाएगा। देह की टकराव हुई हो और चोट लगी हो तो इलाज करने से ठीक हो जाएगी, लेकिन घर्षण और संघर्षण से मन में जो दाग पड़ गए हों, बुद्धि पर दाग पड़े हों, उन्हें कौन निकालेगा? हजारों जन्मों तक भी नहीं जाएँगे।

**प्रश्नकर्ता :** घर्षण और संघर्षण से मन और बुद्धि पर घाव पड़ते हैं ?

**दादाश्री :** अरे! मन-बुद्धि पर तो क्या, पूरे अंतःकरण पर घाव पड़ते रहते हैं और उसका असर शरीर पर भी होता है। घर्षण से तो कितनी सारी मुश्किलें हैं।

**प्रश्नकर्ता :** आप कहते हैं कि घर्षण से सारी शक्तियाँ खत्म हो जाती हैं, तो क्या जागृति से शक्तियाँ वापस खिंचेंगी ?

**दादाश्री :** शक्तियाँ खींचने की ज़रूरत नहीं है, शक्तियाँ तो हैं ही। शक्तियाँ अब उत्पन्न हो रही हैं। पहले जो घर्षण हो चुके थे और उससे जो नुकसान हुआ था, वही वापस आता है। लेकिन अब यदि नया घर्षण पैदा करोगे, तो फिर शक्तियाँ चली

जाएँगी। आई हुई शक्ति भी चली जाएगी और यदि खुद घर्षण होने ही न दें, तो शक्ति उत्पन्न होती रहेगी!

इस दुनिया में बैर से घर्षण होता है। संसार का मूल बीज बैर है। जिसके बैर और घर्षण - ये दो बंद हो गए, उसका मोक्ष हो गया। प्रेम बाधक नहीं है, बैर जाए तो प्रेम उत्पन्न हो जाए।

**परार्थ जीवन जीने में फायदा खुद को ही**

*'जो मरण आ जिंदगीनी छे अरे छेल्ली दशा,  
(देख मृत्यु, इस जिंदगी की हे रे अंतिम दशा)*

*तो परार्थे वापरवामां, आ जीवनना मोह शा ?'*  
(तो परार्थ के लिए इसका उपयोग करने में, इस जीवन का मोह क्या?)

यह स्वार्थ तो गलत स्वार्थ है, लेकिन इस परार्थ में यानी अभी भी किसी के, औरों के लाभ के लिए जीवन गुजरे, जैसे कि यह जो मोमबत्ती जलती है, वह क्या खुद के प्रकाश के लिए जलती है? सामनेवाले के लिए, परार्थ के लिए करती है न? सामनेवाले के फायदे के लिए करती है न? उसी तरह अगर ये लोग सामनेवाले के फायदे के लिए जीएँ तो उनका खुद का फायदा तो इसमें है ही। यों भी मरना तो है ही! अतः अगर सामनेवाले का फायदा करने जाएगा तो तेरा फायदा तो अंदर है ही और सामनेवाले को त्रास देने जाएगा तो उसमें तुझे त्रास है ही। तुझे जो करना हो वह कर। तो क्या करना चाहिए?

**डाँटना, वह है पगला अहंकार**

जितना हो सके उतना आत्मा के लिए ही करने जैसा है और इस संसार में तो कुछ इधर-उधर हो सके, ऐसा नहीं है। संसार में तो आपको 'चंदूभाई' (फाइलन-१) से कहना है 'काम करते रहो। फिर

कुछ इधर-उधर हो जाए तो भी डाँटना मत, किसी से झगड़ना मत और काम करते रहो,' कहना है। संसार में लड़ने-झगड़ने की बात ही नहीं है। वह तो जिसे रोग हुआ हो न, वह हर बात पर लड़ता-झगड़ता रहता है। ये गाय भैंस क्या रोज़ झगड़ती हैं? ज्यादा से ज्यादा कभी-कभार, वर्ना तो सभी एक साथ आती-जाती हैं। एक-दूसरे के साथ किच-किच, झंझट नहीं। डाँटने की तो बात ही नहीं होती। डाँटना यानी अहंकार, खुला अहंकार, उसे पगला अहंकार कहा जाता है। मन में ऐसा मानते हैं कि 'मेरे बिना नहीं चलेगा, सबकुछ बिगड़ जाएगा।' ऐसे अहंकार को पगला अहंकार कहा जाता है। इसलिए जब डाँटने-करने की बात आए, तब चुप रहना चाहिए।

**किसी को कुछ भी कहना, वह एक तरह का रोग है**

जगत् में किसी से कुछ भी, एक अक्षर भी नहीं कहना चाहिए। कहना, एक प्रकार का रोग है। कुछ कहना पड़े तो वह सब से बड़ा रोग है। सब अपना-अपना हिस्सा लेकर आए हुए हैं। फिर दखल करने की ज़रूरत क्या है? एक अक्षर भी मत बोलना। इसलिए तो हमने यह 'व्यवस्थित' का ज्ञान दिया है। यदि व्यवस्थित का ज्ञान नहीं हो तो मनुष्य बोले बगैर रह ही नहीं सकता। क्योंकि यदि नौकर के हाथों प्याले टूट जाए तो यह बोले बगैर रहेगा ही नहीं न! 'क्यों तोड़े? तेरे हाथ टूट गए हैं या कुछ हुआ है?' लेकिन अब यदि प्याले टूट जाएँ तो 'व्यवस्थित' का ज्ञान दिया हुआ है इसलिए कुछ बोलना ही नहीं है न! और फिर 'व्यवस्थित' ही हुआ है।

इसलिए एक अक्षर तक बोलना बंद कर दो। बोलने को तो भगवान ने 'भयंकर रोग' कहा है। हाँ, यदि बोलना हो तो सिर्फ ज्ञानी ही बोल सकते हैं, और फिर उनकी वाणी कैसी होती है? परेच्छानुसारी होती है। औरों की इच्छाओं के आधार पर वे बोलते

हैं। औरों की इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए वे बोलते हैं, वर्ना उन्हें बोलने की ज़रूरत ही क्या है? और उनकी वाणी स्याद्वादवाणी, बहुत मन करता है कि सुनते ही रहें। और दूसरों की वाणी तो सुनते ही अंदर आत्मा हिल जाता है, सबकुछ हिल जाता है, भयंकर पाप लगता है। इस जगत् में ज़रा सा भी कुछ नहीं बोलना चाहिए। ज़रा सा बोलना भी किच-किच कहा जाता है।

**किच-किच से होता है नुकसान खुद को ही**

इस किच-किच से संसार में कोई फायदा नहीं होता, नुकसान ही होता है। किच-किच यानी कलह, इसलिए भगवान ने उसे 'कषाय' कहा है।

यानी जगत् में सिर्फ एक ही काम करना है कि किसी को कुछ बोलना नहीं है। जो हो वह आराम से खा लेना है और अपने-अपने काम पर चलते बनना है। काम करते रहना है, कुछ बोलना नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादाजी, हम तो पत्नी या बच्चों से कुछ कहते हैं न, तो जैसे नाटक में गुस्सा दिखाते हैं न, ऐसा यों साधारण होता है।

**दादाश्री :** हाँ, नाटकीय भाव रखने में हर्ज नहीं है। यदि सामनेवाले किच-किच कर रहे हों, तो हमें किच-किच नहीं करनी है। वे हमें मूर्ख समझें तो मूर्ख मान लेना। कानून उनके हाथों में थोड़े ही है, मोक्ष में जाने का? दादा से हमें सर्टिफिकेट लेना है, कि सर्टिफिकेट कैसा है, बस।

**सावधान रहें अवर्णवाद से**

**प्रश्नकर्ता :** 'हे दादा भगवान ! मुझे, किसी भी देहधारी उपदेशक साधु, साध्वी या आचार्य का अवर्णवाद, अपराध, अविनय न करने की परम शक्ति दीजिए।' इसमें जो अवर्णवाद शब्द है न, उसकी यथार्थ समझ क्या है?



## दादावाणी

**दादाश्री :** किसी भी तरह जैसा है वैसा बताने के बजाय उल्टा बताना, वह अवर्णवाद कहलाता है। जैसा है वैसा तो नहीं लेकिन ऊपर से उससे उल्टा। जैसा है वैसा चित्रण करें, गलत को गलत और सही को सही कहें, तो अवर्णवाद नहीं कहलाता। लेकिन पूरा ही गलत कहें, तब अवर्णवाद कहलाता है।

अवर्णवाद यानी यदि किसी व्यक्ति की बाहर अच्छी इज्जत तहो, शान हो, कीर्ति हो तो उसे आप कुछ गलत बोलकर मिट्टी में मिला दो, उसे अवर्णवाद कहते हैं। यह अवर्णवाद तो निंदा से भी ज्यादा खराब चीज़ है। अवर्णवाद यानी सामनेवाले के बारे में घोर निंदा करना। लोग कैसी निंदा करते हैं? साधारण निंदा करते हैं। लेकिन घोर निंदा करना, उसे अवर्णवाद कहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** घोर निंदा यानी कैसी निंदा?

**दादाश्री :** उसका रूपक (लक्षण) ही खराब बताते (दिखाते) हैं। यदि साधारण निंदा करे कि, 'यह व्यक्ति अच्छे नहीं हैं।' तो उसे साधारण निंदा कहते हैं। लेकिन उसके बारे में सामनेवाले के मन में गलत बिठा (ठसा) देते हैं, उसे अवर्णवाद कहते हैं।

किसी भी व्यक्ति में कुछ तो अच्छा होगा या नहीं होगा?

**प्रश्नकर्ता :** होगा ही न!

**दादाश्री :** और थोड़ा बुरा भी होता है। लेकिन उसेक बारे में सबकुछ बुरा बोलें तो फिर उसे अवर्णवाद कहते हैं। 'इस मामले में थोड़े से ऐसे हैं, लेकिन दूसरे मामलों में बहुत अच्छे हैं।' ऐसा होना चाहिए।

**अब किसी के भी व्यू पोइन्ट का प्रमाण नहीं दुभे**

**प्रश्नकर्ता :** अब ज़रा 'किसी का भी अहम्

न दुभे, ऐसी स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद वर्तन और स्याद्वाद मनन करने की परम शक्ति दीजिए।' इसे समझाइए।

**दादाश्री :** स्याद्वाद यानी सब लोग किस भाव से, किस 'व्यू पोइन्ट' (दृष्टिकोण) से कहते हैं, हमें यह समझना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** सामनेवाले का 'व्यू पोइन्ट' समझना वह स्याद्वाद कहलाता है ?

**दादाश्री :** सामनेवाले का 'व्यू पोइन्ट' समझना और उसके मुताबिक व्यवहार करना, उसका नाम स्याद्वाद। उसके 'व्यू पोइन्ट' को दुःख नहीं पहुँचे ऐसा व्यवहार करना। चोर के 'व्यू पोइन्ट' को भी दुःख नहीं हो उस तरह आप बोलें, उसका नाम स्याद्वाद!

हम जो बात करते हैं, वह मुस्लिम हो या पारसी हो, सभी को एक रूप से समझ में आती है। किसी का प्रमाण नहीं दुभता कि 'पारसी ऐसे हैं, स्थानकवासी ऐसे हैं,' ऐसा दुःख नहीं होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** यहाँ पर यदि कोई चोर बैठा हो, उसे हम कहें कि चोरी करना अच्छा नहीं है, तो उसका मन तो दुभेगा ही न?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं कहना है। हमें उसे कहना चाहिए कि 'चोरी करने का फल ऐसा आता है। तुझे ठीक लगे तो करना।' ऐसा कह सकते हैं। अर्थात् बात ढंग से करनी चाहिए। तब वह सुनने को तैयार होगा। वरना वह बात को सुनेगा ही नहीं और उल्टे आप अपने शब्द व्यर्थ गँवाएँगे। हमारा बोला व्यर्थ जाएगा और ऊपर से वह बैर बाँधेगा कि 'बड़े आए नसीहत देनेवाले!' ऐसा नहीं होना चाहिए।

लोग कहते हैं कि चोरी करना गुनाह है। लेकिन चोर क्या समझता है कि चोरी करना मेरा धर्म है। हमारे पास कोई चोर को लेकर आए तो हम

उसके कंधे पर हाथ रखकर अकेले में पूछेंगे कि 'भाई, यह बिजनेस (धंधा) तुझे अच्छा लगता है? तुझे पसंद है?' फिर वह अपनी हकीकत बताएगा। हमारे पास उसे भय नहीं लगता। मनुष्य भय के कारण झूठ बोलता है। फिर उसे समझाएँ कि, 'यह जो तू करता है उसकी ज़िम्मेदारी क्या होती है, उसका फल क्या आता है, यह तुझे मालूम है?' 'वह चोरी करता है' ऐसा तो हमारे मन में भी नहीं होता और यदि ऐसा हमारे मन में होता तो उसके ऊपर असर होता। हर कोई अपने-अपने धर्म में है। किसी भी धर्म का प्रमाण नहीं दुभे, उसका नाम स्याद्वाद वाणी। स्याद्वाद वाणी संपूर्ण होती है। प्रत्येक की प्रकृति अलग-अलग होती है, फिर भी स्याद्वाद वाणी किसी की भी प्रकृति को हरकत नहीं करती।

**प्रश्नकर्ता :** स्याद्वाद मनन अर्थात् क्या ?

**दादाश्री :** स्याद्वाद मनन अर्थात् विचारणा में, विचार करते समय भी किसी धर्म का प्रमाण नहीं दुभाना चाहिए। वर्तन में तो होना ही नहीं चाहिए लेकिन विचार में भी नहीं होना चाहिए। बाहर बोलें वह अलग लेकिन मन में भी ऐसे अच्छे विचार होने चाहिए कि सामनेवाले का प्रमाण नहीं दुभे। क्योंकि मन में जो (बुरे) विचार आते हैं, वे सामनेवाले को पहुँचते हैं। इसलिए तो इन लोगों के मुँह चढ़े हुए होते हैं। क्योंकि आपके विचार वहाँ पहुँचकर उन्हें असर करते हैं।

किसी के लिए भी बुरा या ऐसा-वैसा नहीं सोचना चाहिए। ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए। 'सब सब की संभालो', बस! और कोई झंझट नहीं।

**जीवमात्र में भगवान हैं, किसे दुःख देंगे ?**

यह जगत् अपना है, इसमें अन्य किसी की ज़िम्मेदारी है ही नहीं। भगवान यदि ऊपरी (बॉस) होते न, तब तो हम समझें कि 'हम पाप करेंगे और

भगवान की भक्ति करेंगे तो धुल जाएगा,' लेकिन ऐसा नहीं है। यह तो अपनी ही ज़िम्मेदारी है। किंचित्मात्र, एक भी उल्टा विचार आया तो उसकी ज़िम्मेदारी अपनी ही है। होल एन्ड सोल रिस्पॉन्सिबल हम ही हैं। ऊपर कोई बाप भी नहीं है। आपका कोई ऊपरी है ही नहीं, जो हो, वह आप ही हो।

सिर्फ व्यक्ति के रूप में सब अलग हैं, लेकिन हैं आत्मा ही, यानी कि वे भी भगवान ही हैं। इसलिए किसी का भी नाम मत देना और किसी को परेशान मत करना। हेल्प हो सके तो करना और नहीं हो तो कोई बात नहीं, लेकिन परेशान तो नाम मात्र के लिए भी नहीं करना। लोग बाघ को परेशान नहीं करते, साँप को परेशान नहीं करते, और मनुष्यों को ही परेशान करते हैं, उसका क्या कारण है? बाघ या साँप से तो मर जाएँगे, और मनुष्य तो, बहुत हुआ तो लकड़ी से मारेगा या फिर ऐसा ही कुछ करेगा। इसीलिए मनुष्य को परेशान करते हैं न! किसी को भी परेशान नहीं करना चाहिए, क्योंकि भीतर परमात्मा बैठे हैं, आपको समझ में आती है यह बात ?

जीवमात्र में भगवान बिराजमान हैं, लेकिन मनुष्य में तो भगवान व्यक्त रूप में हैं, ईश्वर स्वरूपी हो गए हैं, भले ही परमेश्वर नहीं बने हैं। ईश्वर क्यों कहलाते हैं? क्योंकि वह यदि मन में पक्का कर ले न कि 'इन्हें एक दिन गोली से मार डालना है,' तो वह एक दिन गोली चलाकर मार सकता है न? इस तरह से ये ईश्वर स्वरूप है, अतः उनका नाम ही नहीं लेना चाहिए। इसलिए हम कहते हैं न, कि इस काल में एडजस्ट एवरीव्हेर हो जाओ। कहीं भी डिसएडजस्ट होने जैसा नहीं है। यहाँ से तो भाग छूटने जैसा है। 'यह' विज्ञान तो एक-दो जन्मों में मोक्ष में ले जानेवाला है, इसलिए यहाँ काम निकाल लेना है।

**झगड़ा व बैर करने से कैसे चलेगा ?**

यह पूरा संसार हिसाब चुकाने का कारखाना

है। बैर तो सास बनकर, बहू बनकर, बेटा बनकर, अंत में बैल बनकर भी चुकाना पड़ेगा। बारह सौ रुपये देकर बैल खरीदा हो और दूसरे ही दिन वह मर जाता है। ऐसा है यह जगत्। अनंत जन्म सिर्फ बैर बाँधने में ही पूरे हो गए हैं। यह जगत् बैर से खड़ा है। ये तो घर में भी बैर बाँध लेते हैं और कुछ लोग तो घर में बैर नहीं बाँधते, बाहर झगड़ा करते हैं। उसे पता है कि 'मुझे तो इसी कमरे में रात को इसी के साथ रहना पड़ेगा, तो फिर झगड़ा करके क्या फायदा?' जीवन जीने की कला यह है कि संसार में बैर नहीं बंधे और छूट सकें। वर्ना साधु-साध्वी भी भाग ही जाते हैं न? वैसे, भाग नहीं जाना चाहिए। यह तो जीवन संग्राम है, जन्म से ही संग्राम शुरू! और लोग मौज-मस्ती में पड़ गए हैं!

### जीओ जीवन हेतु के लिए

धर्म तो बाद में करने की चीज़ है लेकिन पहले जीवन जीने की कला समझ लो और शादी करने से पहले बाप बनने की योग्यता प्राप्त कर लो। यदि एक 'इंजन' लाकर उसमें प्रेटोल भरकर चलाते रहें तो ऐसा 'मीनिंगलेस' (बिना उद्देश्य का) जीवन किस काम का? जीवन का कुछ हेतु होना चाहिए। यह तो 'इंजन' चलता ही रहता है, चलता ही रहता है, ऐसा निरर्थक नहीं होना चाहिए। इंजन में यदि पट्टा (बेल्ट) लगा दें तो भी कुछ पीसा जा सकता है लेकिन ये तो पूरी जिंदगी निकल जाती है फिर भी कुछ कर नहीं पाते बल्कि आनेवाले जन्म के लिए दोष खड़े करते हैं।

संसार की भयानकता यदि समझ में आ जाए तो मोक्ष की इच्छा तीव्र होगी। संसार की भयानकता, वह तो मोक्ष के लिए काउन्टर-वेट (समकक्षीय तौल) है। आज भयानकता लगती है फिर भी मूर्छा की वजह से वापस गहरी चोट खा जाता है। फिर लगता है, 'कोई बात नहीं, कल

ठीक हो जाएगा।' पीतल क्या कभी सोना बन सकता है? नहीं, वह तो कभी भी सोना नहीं बन सकता, इसलिए ऐसे संसार की भयानकता समझ लेनी चाहिए। यह तो ऐसा ही समझता है कि मैं इसमें से कुछ सुख ले रहा हूँ? ऐसा करूँगा तो कुछ सुख मिलेगा, लेकिन वहाँ पर भी मार खाता है। इन विकल्पी सुखों के लिए भटकता रहता है लेकिन जब पत्नी विरुद्ध हो जाए तब उस सुख का पता चलता है कि ये संसार भोगने जैसा नहीं है। लेकिन यह तो तुरंत ही मूर्छित हो जाता है। मोह के कारण इतनी मार खाता है, इसका भी भान नहीं रहता।

### दुःख टालने के लिए, दुःख देने का बंद करो

किसी को दुःख देकर आपको सुख मिले ऐसा कभी नहीं हो सकता। सभी को सुख देने का नियम बना लो, तभी से आपके यहाँ सुख आने लगेगा। इसलिए सुख देने की शुरुआत नए सिरे से करनी है और यदि कोई गालियाँ दे तो भी आप आर्शीवाद देना क्योंकि आपने जो दिया है वही लौटाने आया है। इसलिए उसे जमा कर लेना। आज यदि कोई दे रहा है तो आपका ही दिया हुआ लौटाने आता है। खुद मेहनत यानी अच्छी भावनाएँ करके सब परिवर्तन लाना पड़ेगा। किसी को दुःख नहीं हो ऐसा बरताव करना पड़ेगा, वर्ना मार खा-खाकर मर जाना पड़ेगा। अनंत जन्मों से भटक रहे हैं, और भी अनंत जन्मों तक भटकना पड़ेगा तो भी ठीकाना नहीं मिलेगा। खुद सीधे हुए बगैर कभी भी हल आनेवाला नहीं है।

अनंत जन्मों से भटकने के बावजूद भी ज़रा सा भी (आत्मा का) सुख नहीं मिलता। सुख आपके अंदर ही भरा पड़ा है। उसे हम खोल दें और यदि आप उसके अनुसार चलो तो राह पर आएगा, वर्ना कैसे राह पर आएगा? यदि आपसे कहें कि इस रास्ते से जाना, फिर भी आप दूसरे

रास्ते से जाएँगे तो इसका मतलब क्या है? यह तो जो मार्गदर्शन दे, उनके मार्गदर्शन के अनुसार चलेंगे तो अपार सुख अंदर भरा पड़ा है, वह प्राप्त हो सकता है। बाकी बाहर सुख को क्यों ढूँढते हो? यानी कहे अनुसार चलोगे तो सब फर्स्टक्लास हो जाएगा।

‘द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ’ यह बात मैं फर्स्ट टाइम खुली कर देता हूँ। जैसा है वैसा नेकेड (नग्न) सत्य कह देता हूँ। इसलिए फिर जो मनुष्य भगवान के नाम पर गलत करते हैं या गलत मानते हैं कि हम भगवान की भक्ति करेंगे तो पाप धुल जाएँगे और ऐसा सोचकर पाप करते ही रहते हैं, उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी का भान हो जाएगा कि वर्ल्ड तो इटसेल्फ पज़ल हो गया है। ऊपर कोई बाप भी भगवान नहीं है। ऊपरवाले का आधार लेकर क्यों गलत कर रहा हूँ? आपको खुद ही परिवर्तन लाना पड़ेगा।

जैसे कि खेत में किसान यदि एक मन गेहूँ के दाने डाले तो कितने गेहूँ घर ले आता है? तीस मन गेहूँ ले आता है। ऐसे ही यदि सभी को एक मन सुख देंगे तो तीस मन सुख ले आएगा इसलिए सुख देते रहो। और यदि कोई आपको दुःख देता है तो वह पिछली बहीखाते का हिसाब है उसे जमा कर लो और नया मत देना, वर्ना नया व्यापार शुरू हो जाएगा।

### असल संयमी जीव दुःख नहीं देता किसी को

आज के सब लोग तो सामनेवाले को दुःख हो, ऐसा ही कर डालते हैं। उसमें देर ही नहीं लगती न! और कोई उनसे कुछ कहे तो उन्हें भी दुःख हो जाता है। यानी हमेशा जला हुआ इंसान ही दूसरे को जलाता है। अगर आप जले नहीं हो तो आप क्यों जलाओगे? आपको दुःख ही नहीं है। आपको अब कहाँ दुःख होता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं। नहीं होता है।

दादाश्री : तो फिर दूसरों को जलाने का क्या फायदा? उसे सुखी करना चाहिए।

बाकी आप यों ही कहो कि ‘मुझ में संयम है,’ तो वह संयम नहीं चलेगा। आप सभी को ध्येय रखना है कि भाई यह ध्येय है हमारा। मेरा वह ध्येय पूरा हो गया है और किसी जगह कमजोर पड़ जाओ तो भी मैं बदल डालूँगा न फिर। कभी कमजोर भी पड़ सकते हो। सभी का समाधान थोड़े ही हो सकता है? कैसे-कैसे दिमागवाले आते हैं! लेकिन आपका ध्येय ऐसा होना चाहिए, ऐसे भाव में (खुद) होने चाहिए। कहने का मतलब है कि इच्छा-भावना आपकी यही है। शायद कभी भूल भी हो सकती है लेकिन अगर आपकी भावना यही है, तो तब से हम आपको संयमी कहते हैं। भूल हो जाए वह चीज़ अलग है, लेकिन आपकी भावना क्या है? आज के संयम में लोगों को ऐसी भावना भी नहीं होती है। अब संयमी किसे कहते हैं? वह तो ऐसा होता है कि अगर सामनेवाला असंयमी हो तो भी उसे किंचित्मात्र दुःख नहीं होने दे।

### आरोपित सुख आखिर में देता है दुःख

अपने मन-वचन-काया से किसी को दुःखदाई नहीं हो जाएँ तो अंदर भगवान प्रकट हो जाएँगे। भगवान का घर कोई आकाश में नहीं है, वहाँ तो बना ही कैसे सकते हैं? वहाँ पर तो नींव ही नहीं रख सकते। वे सारी तो सिर्फ कल्पनाएँ ही हैं। यह एकदम सच्ची बात बता कर रहा हूँ क्योंकि मेरे अंदर (भगवान) प्रकट हो गए हैं। मैंने उन्हें देखा है, इसलिए कह रहा हूँ कि भाई, भगवान ऐसे-ऐसे हैं। सारी कल्पनाएँ गलत हैं। लेकिन जगत् कल्पना में रचा-पचा हुआ है, उसे तो कल्पना ही चाहिए। कुछ और सही हो न तो

उतना हिस्सा उन्हें पसंद नहीं आता। उन्हें अपने टेस्ट (स्वाद) का ही चाहिए, मज़ा आ जाता है उन्हें। भगवान मेरा मामेरा (शादी में मामा के घर से आनेवाला दहेज) दिलवाएँगे, उनके हाथ-पैर नहीं हैं, वह विज्ञान (स्वरूप) है। वे किसी के लिए दुःखदाई नहीं हैं और किसी के लिए सुखदाई भी नहीं हैं। सुख और दुःख वे तो सिर्फ कल्पनाएँ ही हैं, खुद ही अनंत सुख का धाम है, उसी में से सारा सुख बाहर आता है। और ये सब तो कल्पनाओं में से अरोपित किया हुआ सुख है, यह कल्पित सुख है, वर्ना सुख नहीं है। ये सब सिर्फ बंधन हैं। वर्ना भगवान कहीं दूर नहीं हैं। वीतरोगों का विज्ञान ऐसा होता है कि राग-द्वेष नहीं हों। गालियाँ दे तो भी राग-द्वेष नहीं होते, मार मारे तो भी राग-द्वेष नहीं होते। दुनिया में कोई दोषित नहीं दिखाई दे, ऐसा होता है। वीतराग विज्ञान उसे कहा जाता है कि कोई दोषित दिखाई ही नहीं दे। पूरा जगत् निर्दोष दिखाई दे।

### सही समझ सजाए संसार

इसे जीवन कैसे कह सकते हैं? जीवन कितना सुशोभित होना चाहिए। एक-एक व्यक्ति की सुगंध आनी चाहिए। आसपास कीर्ति फैली हुई होती है कि 'कहना पड़ेगा, ये जो सेठ रहते हैं न, वे कितने अच्छे हैं! उनकी बातें कितनी अच्छी है! उनका वर्तन कितना अच्छा है।' क्या ऐसी कीर्ति हर जगह दिखाई देती है? क्या लोगों की ऐसी सुगंध आती है?

**प्रश्नकर्ता :** कभी-कभी किसी-किसी व्यक्ति की सुगंध आती है।

**दादाश्री :** किसी-किसी व्यक्ति की, लेकिन वह भी कितनी? वह भी फिर उनके घर पर पूछो न तो बदबू आती है बाहर सुगंध आती है लेकिन उनके घर पर पूछें न तो कहेंगे, 'उनका तो नाम ही

मत लेना, उनकी तो बात ही मत करना।' यानी इसे सुगंध नहीं कह सकते।

जीवन तो दूसरों की मदद के लिए ही बीताना चाहिए। अगरबत्ती सुलगती है, तो क्या वह अपनी सुगंध खुद लेती है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** जब तक सुलगती है तब तक पूरी जिंदगी सभी को सुगंध ही देती है न। क्या उसके जैसा है अपना जीवन? सभी को सुगंध देनी चाहिए। लोग बदनाम करे उसका क्या मतलब? लोग कोई पैसे लेने की फिराक में नहीं हैं, और यदि अंदर से वैसे हों तो उन्हें भी हेल्प करनी पड़ती है।

कोई एक गुलाब का फूल देखें तो वह भी अच्छा लगता है। और यदि मनुष्य को देखें तो (उसे) अच्छा ही नहीं लगता। यदि यहाँ एक अगरबत्ती सुलग रही हो तो पूरे कमरे को सुगंधित कर देती है और इन मनुष्यों में से तो बदबू आती है। आप कैसे लोग हो? बदबू आती है, बाहर किसी की सुगंध ही नहीं आती, वर्ना पच्चीस-पच्चीस मील की दूरी तक सुगंध फैल जाती है, नहीं फैलती सुगंध? यदि अगरबत्ती की सुगंध फैल सकती है तो क्या व्यक्ति की नहीं फैल सकती? तू बड़ौदा शहर में रहता है तो क्या किसी की भी सुगंध फैली हुई दिखाई दी? अरे जन्म लिया और मर गए, जन्म लिया और मर गए। कुत्ते भी खा-पीकर मर जाते हैं, उसमें तूने क्या तीर मार लिया? मनुष्यपना गँवा दिया! मनुष्य जीवन व्यर्थ गया! मनुष्य जीवन यानी बहुत कीमती, अचिंत्य चिंतामणी देह मनुष्य कहलाता है। और इसे इसमें गँवा दिया, खाने-पीने में ही? और औरत (पत्नी), उस औरत तक को संभालना नहीं आता, उसके साथ भी रात-दिन, दखल-दखल और लड़ाई-झगड़ा।

ये संसार दुःखदाई नहीं है बल्कि नासमझी

दुःखदाई है। इसलिए हम आपकी नासमझी निकालकर आपको समझ बता देते हैं। ताकि आपका संसार दुःखदाई नहीं लगे ताकि आर्त-ध्यान रौद्र-ध्यान नहीं होते फिर निरंतर धर्मध्यान रहता है।

### समझ लें सुखी होने की चाबी

सुखी होने के लिए सिर्फ तीन वाक्य हैं। आप लिख लो:

(१) पॉज़िटिव अहंकार - किसी को भी आपसे किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो ऐसा अहंकार, वह है पॉज़िटिव अहंकार। (२) दुःखी होने के लिए, नेगेटिव अहंकार - खुद का यदि ज़रा सा भी अपमान हो जाए तो बैर रखता है और जाकर फौज़दार को बता देता है कि 'उसने घर में तेल के डिब्बे जमाकर रखे हैं।' अरे भाई! तुझे बैर है इसिलए ऐसा किया? किसलिए उसे फौज़दार से पकड़वा दिया? बैर लेने के लिए! यह नेगेटिव अहंकार। और (३) यदि मोक्ष में जाना हो तो 'आरोपित भाव' से मुक्त हो जाओ, अहंकार से मुक्त हो जाओ।

### किसी को भी दुःख देकर मोक्ष में नहीं जा सकते

इंसान की तरह इस जगत् में अपने मन-वचन-काया लोगों के काम में आएँ, वही अपना धर्म है। लोगों के कुछ काम करें, वाणी से किसी को अच्छी बात समझाएँ। बुद्धि से समझाएँ, किसी को दुःख न हो वैसा अपना आचरण रखें, वह अपना धर्म है। किसी जीव को दुःख नहीं हो, उसमें यदि सभी जीवों के लिए नहीं हो सके तो सिर्फ मनुष्यों के लिए ही ऐसा प्रण करना चाहिए। और यदि मनुष्यों के लिए ऐसा प्रण किया हुआ हो तो सभी जीवों के लिए प्रण करना चाहिए कि इस मन-वचन-काया से किसी जीव को दुःख न हो। इतना ही धर्म समझना है!

**प्रश्नकर्ता :** आपका ज्ञान लेने के बाद ऐसा रहता है कि जैसे गंगा का पवित्र झरना बह जाता है, वैसे ही हमें भी बह जाना है।

**दादाश्री :** हाँ, बह जाना। किसी को भी असर नहीं हो, किसी को भी दुःख नहीं हो, उस तरह से। किसी को भी दुःख देकर हम मोक्ष में जा सकें, ऐसा नहीं हो सकता। हमसे किसी को दुःख हुआ तो हम जा रहे होंगे तो वहाँ से वह रस्सी डालकर पकड़ेगा कि खड़े रहो, और यदि हम सभी को सुख देंगे तो सभी जाने देंगे। चाय-पानी करवाएँगे तो भी जाने देंगे, पान देंगे तो भी, कुछ नहीं तो लौंग का दाना देंगे तो भी जाने देंगे। लोग आशा रखते हैं कि कुछ मिलेगा। लोग आशा नहीं रखेंगे तो आप मेहरबान कैसे? मोक्ष में जानेवाले मेहरबान कहलाते हैं। तो मेहरबानी दिखाते-दिखाते हमें जाना है।

**प्रश्नकर्ता :** लोगों को आशा रहती है, लेकिन हमें आशा रखने की क्या ज़रूरत?

**दादाश्री :** हमें आशा नहीं रखनी है। यह तो उन्हें पान-सुपारी या कुछ भी देकर चलने लगना है, वर्ना ये लोग तो उल्टा बोलकर रोकेँगे। इसीलिए हमें अटा-पटाकर काम निकाल लेना है। लोग ऐसे ही मोक्ष में नहीं जाने देंगे। लोग तो कहेंगे कि, 'यहाँ क्या दुःख है कि वहाँ चले? यहाँ हमारे साथ मजे करो न!'

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन हम लोगों का सुनें तब न?

**दादाश्री :** सुनें नहीं, तब भी वे उल्टा करेंगे। उनके लिए चारों दिशाएँ खुली हैं और आपकी एक ही दिशा खुली है। इसलिए उन्हें क्या? वे उल्टा कर सकते हैं और आपको उल्टा नहीं करना है।

### समझा-बुझाकर काम निकाल लेना है अब

सभी को राज़ी रखना है। राज़ी करके

चलते बनना है। ऐसे आपके सामने ताककर देख रहा हो, तब उसे 'कैसे हो साहब?' कहा, तो वह जाने देगा और ताककर देख रहा हो और आप कुछ नहीं बोले, तब वह मन में कहेगा कि यह तो बहुत अकड़वाला है! फिर वह हंगामा करेगा!

**प्रश्नकर्ता :** हम सामनेवाले को राजी करने जाएँ तो अपने में राग नहीं आ जाएगा?

**दादाश्री :** उस तरह से राजी नहीं करना है। इस पुलिसवाले को किस तरह राजी रखते हो? पुलिसवाले के प्रति राग होता है आपको?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** वह भी सब को राजी रखने की ज़रूरत नहीं है। अपने रास्ते में कोई आड़े आए, तब उसे समझा-बुझाकर काम निकाल लेना है। इन्हें तो आड़े आते देर नहीं लगती। उनमें से किसी का आपको धक्का लग जाए, तो बदले में शिकायत करने मत जाना, लेकिन उसे अटा-पटाकर काम निकाल लेने जैसा है।

विचित्र काल आ रहा है! आँधियाँ पर आँधियाँ आनेवाली हैं। इसलिए सावधान रहना। जैसे पवन की आँधियाँ आती हैं न, वैसे ही कुदरत की आँधी आ रही है। मनुष्यों पर बड़ी मुसीबतें हैं। किस आधार पर जी रहे हैं, उसकी खुद को समझ नहीं है।

## व्यवहार छोड़ेगा, तभी छूट पाएँगे

**प्रश्नकर्ता :** अध्यात्म में तो आपकी बात के लिए कुछ कहने जैसा है ही नहीं लेकिन व्यवहार में भी आपकी बात 'टॉप' की है।

**दादाश्री :** ऐसा है न कि व्यवहार में 'टॉप' की समझ के बगैर कोई भी मोक्ष में नहीं गया, चाहे जितना भी यदि बारह लाख का भी आत्मज्ञान हो लेकिन व्यवहार की समझ के बगैर कोई मोक्ष में नहीं गया। क्योंकि (आपको) छुड़वानेवाला तो व्यवहार ही है न! वह नहीं छोड़े, तो आप क्या करोगे? आप तो 'शुद्धात्मा' हो ही लेकिन व्यवहार छोड़ेगा तब न? आप व्यवहार को और उलझा रहे हो, झटपट हल ले आओ न!

## रखो ध्येय, पहुँचना है वहाँ तक

वीतराग विज्ञान यानी क्या? किसी भी जीव को किञ्चित्मात्र भी दुःख न हो। चाहे चोर हो, लुच्चा हो, बदमाश हो, दानेश्वरी हो, किसी के लिए दुःखदाई न बनें। अज्ञान सभी के लिए दुःखदाई है। खुद के लिए भी दुःखदाई और सामनेवाले के लिए भी। वीतराग विज्ञान यानी परमात्मा। खुद ही भगवान। वे किसी के लिए भी दुःखदाई नहीं होते, वे जिसकी देह में प्रकट हो जाएँ न वह देह भी दुःखदाई नहीं होती, वह मन भी दुःखदाई नहीं होता, कुछ भी दुःखदाई नहीं होता। अतः हमें वहाँ तक पहुँचना है।

- जय सच्चिदानंद

## 'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेल आइडी पर इ-मेल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

## व्यवहारिक सुख-दुःख की समझ

इस संसार के जो सुख-दुःख हैं, उन्हें भगवान ने सुख-दुःख नहीं कहा है। भगवान ने इसे वेदनीय कहा है। सुख को शांता वेदनीय कहा है और दुःख को अशांता वेदनीय कहा है।

उसकी मात्रा बढ़ जाए तो ऊब जाता है। यदि भोजन रोज़ एक ही प्रकार का दें तो ऊब जाएँगे। इसलिए वह भी वेदना ही है न! पुण्यकर्म से शांता वेदनीय और पापकर्म से अशांता वेदनीय है। शादी में सभी लोग आनंद में होते हैं और भाई के चेहरे पर अरंडी का तेल पीया हो ऐसा क्यों दिखता है? तब कहे, 'भीतर' अशांता वेदक है। तो वह कभी इधर से मारता है और कभी उधर से मारता है और कुछ भी करके दुःख के साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्सिस जमा कर देता है और इन्हें दुःख देता है। ऊपर कोई भगवान या ग्रह वगैरह दुःख नहीं देते हैं। ऊपर कोई बाप भी बेकार नहीं बैठा है आपको दुःख देने के लिए। यह तो भीतर वह वेदक है, वह ऐसा करवाता है। इसमें आत्मा नहीं है। आत्मा के अलावा दूसरी वस्तु है। यह तो पूरी सेना अंदर है। पुलिसवाला, फौजदार, उसका ऊपरी वे सभी इस सेना में हैं।

'ज्ञानीपुरुष' में भी ये दो वेदक होते हैं, लेकिन ज्ञानी देखते और जानते हैं। कुछ अपयश मिले तो हमें कहना चाहिए कि यह तो आपका हिसाब है इसलिए अपयश मिला। हमें तो ज्ञाता-दृष्टा और परमानंदी, यानी पड़ोसी की तरह रहना है। ये तो सब टेम्पेरी एडजस्टमेंट हैं। किसी की दाढ़ दुःखने लगे तो वह क्यों ऐसा नहीं सोचता कि यह हमेशा दुःखती रहेगी तो? इन सबका टाइम होता है। काल पक जाए तब दुःखना बंद हो जाता है। एक अवस्था अड़तालीस मिनट से अधिक नहीं टिकती, इतना नियमवाला है यह जगत्!

अवस्था में सुख नहीं होता है। अवस्था तो निरंतर बदलती ही रहनेवाली है। बगीचे में सुख होता है, फिर भी वापस घर आना पड़ता है, उसके बदले तो इस दुःख की हाँडी में पड़े रहें, जिस जगह पर दुःख है वहीं पड़े रहें तो सुख लगेगा। दुःख सहन करनेवाले को ऑटोमेटिक सुख आता रहता है, क्योंकि जो ताप में चलता है उसे बबूल के नीचे सुख लगता ही है, और यदि किसी को बबूल के नीचे सुख महसूस नहीं होता हो, तो उसे चार-पाँच घंटे गर्मी में घुमाएँ तो बबूल के नीचे भी उसे सुख लगेगा। इस संसार की कलुषित क्रियाएँ और उसके फल के रूप में सुख उत्पन्न होता है! फिर वह घर जाकर पंखा चलाकर बैठे तो, 'अहा, सुख मिला' कहता है। फिर वह चैन से चाय-पानी पीता है। और पूरे दिन घर में ही बैठे रहनेवाले सेठ के लिए यदि पंखा चलाएँ, तो उसे अच्छा नहीं लगेगा, चाय-पानी पसंद नहीं लगेंगे। इस संसार में जो कोई भी सुख है, वह थकान के फल स्वरूप है। तात्त्विक सुख, सनातन सुख आने के बाद कभी भी जाता नहीं!

कुछ जगहों पर औरत पति को दुःख देती है तो किसी जगह पर पति औरत को दुःख देता है। लेकिन वह दुःख किसलिए लगता है? तब कहे, परिमाण से कम दुःख दे रहे हैं, इसलिए। यदि परिमाण से अधिक दुःख परोसेंगे तो सुख लगेगा। जबकि यहाँ ज्ञान क्या कहता है कि, 'यह मार तो पड़ती ही रहेगी।' उसके बाद फिर सुख उत्पन्न हो जाता है!

इन चक्रवर्ती राजाओं को महलों में सुख नहीं लगा और इन गरीबों को झोंपड़ियों में सुख लगता है, वही आश्चर्य है न? सुख तो टिकाऊ होना चाहिए, आने के बाद फिर जाए नहीं। सुख तो, जैसा 'दादा' को है वैसा होना चाहिए, एक क्षण भी वह नहीं जाता, 'दादा' को निरंतर सहज समाधि रहती है!

(दादाश्री की आप्तवाणी - २ में से संकलित)



**दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स**

**१९ मार्च :** अडालज त्रिमंदिर में पूज्य नीरू माँ की नौवीं पुण्यतिथि सुबह ६.३० बजे प्रभात फेरी से मनाई गई। ७ बजे पूज्य नीरू माँ की समाधि स्थल पर महात्माओं ने सामुहिक प्रार्थना-चरणविधि-आरती वगैरह किया। पूज्य श्री ने समाधि के दर्शन करने के बाद आशीर्वचन दिए। सुबह १० बजे सत्संग हॉल में जगत् कल्याण के लिए १ घंटे की स्वरूप कीर्तन भक्ति की गई तथा पूज्य नीरू माँ की स्पेशल विडियो सीडी दिखाई गई। जिसमें प्रेम स्वरूप कैसे बन सकते हैं, पूज्य नीरू माँ प्रेम स्वरूप कैसे बने ऐसे सत्संगों का सुंदर संकलन किया गया था। शाम ४.३० बजे आयोजित विशेष कार्यक्रम दौरान आप्तसिंचन के आठवीं बैच के १३ भाईयों और और बहनों के आप्तसिंचन के पाँचवी बैच की १५ साधक बहनों की समर्पण विधि हुई। साधकों ने पूज्य श्री, माता-पीता, परिवार तथा महात्माओं से आशीर्वाद लिए। चार आप्तकुमारों को आप्तपुत्र और तीन आप्तकुमारियों आप्तपुत्री घोषित किया गया। पूज्य नीरू माँ रचित पदों की स्वरमणा-२७ तथा बच्चों के लिए पदों की GNC-७ ओडियो सीडी का विमोचन पूज्य श्री द्वारा किया गया। रात को पूज्य श्री की निश्रा में पूज्य नीरू माँ के पसंदीदा पदों की विशेष भक्ति का कार्यक्रम आयोजित हुआ। लगभग दस हजार महात्माओं ने इस कार्यक्रम का आनंद उठाया।

**२०-२२ मार्च :** अडालज त्रिमंदिर संकुल के दादानगर हॉल में तीन दिवसीय सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम के दौरान २२०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सत्संग के दौरान बहुत सारे नए मुमुक्षु आए थे और प्रश्न भी पूछे थे।

**२४ मार्च :** जर्मनी और यू.के. के विदेश प्रवास के लिए सीमंधर सिटी से पूज्य श्री ने सुबह प्रस्थान किया। उसी दिन जर्मनी के महात्माओं ने फ्रेन्कफर्ट में पूज्य श्री का जोर-शोर से स्वागत किया।

**२७-३१ मार्च :** इस साल जर्मनी के विलिंगन में 'अक्रम विज्ञान इवेन्ट' का आयोजन हुआ। यह जगह सुविधाजनक और नैसर्गिक वातावरण से भरपूर थी। यूरोप और अन्य खंड के कई देशों से मुमुक्षु हिस्सा लेने आएँ। इसके अतिरिक्त काफी सारे पुराने महात्मा विविध देशों से खास पधारें। रिट्रीट की पूर्व संध्या पर पूज्य श्री इन्फॉर्मल सेशन के दौरान पुराने महात्माओं से मिले और तब जर्मन महात्माओं ने अपने ज्ञान के सुंदर अनुभव कहकर सबको आश्चर्य में डाल दिया। ज्ञानविधि में १८५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। 'चिंता' तथा 'पैसों का व्यवहार' (संक्षिप्त) पुस्तकों का जर्मन भाषा में भाषांतर किया गया है, इन पुस्तकों का पूज्य श्री द्वारा विमोचन हुआ। शिविरार्थियों के लिए पूज्य श्री के दर्शन, २०० प्रतिमाओं की विधि, भक्ति-गरबा, पिकनिक के कार्यक्रम आयोजित हुए। अंतिम दो दिन अंग्रेजी पुस्तक 'साइन्स ऑफ कर्मा' पर सत्संग-पारायण हुआ। कर्म की थ्योरी पर उठनेवाले जर्मन महात्माओं के प्रश्नों के सुंदर जवाब पूज्य श्री ने विविध उदाहरणों द्वारा अंग्रेजी में दिए। सेवार्थी महात्माओं के लिए विशेष सत्संग भी हुआ। ऐसा लग रहा था कि इस साल जर्मनी में GNC सेन्टर की आशास्पद शुरुआत होगी, क्योंकि इस बार रिट्रीट में २० बच्चे थे। उन्होंने पूज्य श्री समक्ष भक्तिपद गाए और सत्संग दौरान प्रश्न भी पूछे। इस रिट्रीट में लगभग ५०० महात्माओं ने हिस्सा लिया था।

**२-६ अप्रैल :** इस साल भी पोन्टीन्स-पेकफील्ड में यू.के. शिविर आयोजित हुआ। इस शिविर में ८०० महात्माओं ने हिस्सा लिया। यू.के. के अलावा अमरिका, केन्या, जर्मनी, स्पेन जैसे देशों से भी महात्मा खास इस शिविर में हिस्सा लेने के लिए आएँ। शिविर में इस बार २१ से कम उम्र के १०० से ज्यादा युवा व बच्चों ने भी हिस्सा लिया। उनके लिए पूज्य श्री का विशेष सत्संग रखा गया था। ५० बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की सुंदर प्रस्तुति की गई, जिसकी महात्माओं ने प्रशंसा की। इस बार 'सत्य-असत्य के रहस्य' पुस्तक पर सत्संग-पारायण हुआ। 'आज्ञा में ऐसे रहना है' और 'अभिप्राय से ही अजागृति' इन विषयों पर विशेष सत्संग हुए। विवाहित भाईयों-बहनों के लिए आप्तपुत्र-आप्तपुत्री द्वारा विशेष सत्संग हुए। 'दादा दरबार' अंतर्गत महात्माओं ने पूज्य श्री के दर्शन किए और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त किया।

**८-९ अप्रैल :** इस्ट लंदन सेन्टर को ज्यादा पुष्टि मिले उस हेतु से दो साल बाद पूज्य श्री का दो दिन का सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुआ। ज्ञानविधि दौरान ५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

**१०-१४ अप्रैल :** यू.के. के लेस्टर शहर में जहाँ पूज्य श्री पाँच दिन रुके थे वहाँ मिनी शिविर जैसा वातावरण हो गया था। सत्संग के बाद ज्ञानविधि में ८५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और महात्माओं के लिए एक दिन विशेष सत्संग तथा 'दादा दरबार' भी आयोजित हुआ। महात्मा पूज्य श्री के साथ एक दिन की पिकनिक के लिए लेस्टर स्पेस सेन्टर देखने गए एवं इन्फॉर्मल सत्संग में 'डब्बा पार्टी' का आनंद उठाया।

## दादावाणी

### Puja Deepakbhai's USA-Canada Satsang Schedule 2015

Contact no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232) &  
email for USA - info@us.dadabhagwan.org, for Canada - info@ca.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & Email
30-Jun	Tue	Houston, TX	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Vallabh Preeti Seva Samaj Hall (VPSS Haveli) 11715 Bellfort Village Dr, Houston, TX 77031	Ext. 1013 houston@ us.dadabhagwan.org
1-Jul	Wed	Houston, TX	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
1-Jul	Wed	Houston, TX	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
2-Jul	Thu	Houston, TX	Aptputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
3-Jul	Fri	New Jersey	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	<b>PROPOSED TRIMANDIR SITE</b> 630 S Middlebush Road, Franklin Township, NJ 08873	Ext. 1020 newjersey@ us.dadabhagwan.org
4-Jul	Sat	New Jersey	Bhumi Pujan	9-30 AM	12-30 PM		
4-Jul	Sat	New Jersey	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
5-Jul	Sun	New Jersey	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
5-Jul	Sun	New Jersey	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
6-Jul	Mon	New Jersey	Follow-up Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Double Tree by Hilton 5400 Computer Dr Westborough MA 01581 Phone # (508) 366- 5511	Ext. 1016 boston@ us.dadabhagwan.org
8-Jul	Wed	Lowell, MA	Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
9-Jul	Thu	Lowell, MA	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
9-Jul	Thu	Lowell, MA	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM	Sringeri Vidhya Bharti Foundation 80 Brydon Drive Etobicoke, Ontario, M9W 4N6	Ext. 1006 toronto@ ca.dadabhagwan.org
10-Jul	Fri	Lowell, MA	Aptputra Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
11-Jul	Sat	Toronto, Canada	Satsang	5-00 PM	7-30 PM		
12-Jul	Sun	Toronto, Canada	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM	Main Hall, Hindu Society of North Carolina Temple - 309 Aviation Parkway Morrisville, NC 27560	Ext. 1003 raleigh@ us.dadabhagwan.org
12-Jul	Sun	Toronto, Canada	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
13-Jul	Mon	Toronto, Canada	Follow-up Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
14-Jul	Tue	Raleigh, NC	Satsang Shibir	5-00 PM	7-30 PM	Jain Temple, 435 N Route 59, Bartlett, IL 60103	Ext. 1005 chicago@ us.dadabhagwan.org
15-Jul	Wed	Raleigh, NC	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
15-Jul	Wed	Raleigh, NC	Satsang Shibir	5-00 PM	7-30 PM		
17-Jul	Fri	Chicago, IL	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Helena Sports Complex 110 Sports Complex Dr. Helena AL, 35080 For GPS use: Ruffin Rd, Helena, AL 35080	Ext. 1004 birmingham@ us.dadabhagwan.org
18-Jul	Sat	Chicago, IL	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
18-Jul	Sat	Chicago, IL	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
19-Jul	Sun	Chicago, IL	Follow-up Satsang	10-00 AM	12-00 PM	Arizona Biltmore, A Waldorf Astoria Resort 2400 East Missouri Ave., Phoenix, AZ 85016	Ext. 10 gp@ us.dadabhagwan.org
20-Jul	Mon	Birmingham, AL	Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
21-Jul	Tue	Birmingham, AL	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
21-Jul	Tue	Birmingham, AL	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
22-Jul	Wed	Birmingham, AL	Follow-up Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
27-Jul	Mon	Phoenix, AZ	GP SHIBIR	9-30 AM	12-00 PM		
27-Jul	Mon	Phoenix, AZ	GP SHIBIR	4-30 PM	7-00 PM		
28-Jul	Tue	Phoenix, AZ	GP SHIBIR	9-30 AM	12-00 PM		
28-Jul	Tue	Phoenix, AZ	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
29-Jul	Wed	Phoenix, AZ	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
29-Jul	Wed	Phoenix, AZ	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
30-Jul	Thu	Phoenix, AZ	Simandhar Swami Pran Pratishtha	9-30 AM	12-00 PM		
30-Jul	Thu	Phoenix, AZ	GP SHIBIR	4-30 PM	7-00 PM		
31-Jul	Fri	Phoenix, AZ	GP Day	8-00 AM	1-00 PM		
31-Jul	Fri	Phoenix, AZ	GP Day	4-30 PM	7-00 PM		

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

भिलाई	दिनांक : 26-27 जून	संपर्क : 9827481336
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा बोटर टेन्क के पास, भिलाई.		
नागपुर	दिनांक : 28 जून	संपर्क : 9860243453
रायपुर	दिनांक : 28-29 जून	संपर्क : 9329644433
बिलासपुर	दिनांक : 30 जून	संपर्क : 9425530470
कोलकाता	दिनांक : 1-2 जुलाई	संपर्क : 9709220292
कोलकाता	दिनांक : 3 जुलाई	संपर्क : 9090276204
कटक	दिनांक : 4 जुलाई	संपर्क : 9668159987
भुवनेश्वर	दिनांक : 5 जुलाई	संपर्क : 9668159987
बालासोर	दिनांक : 6 जुलाई	संपर्क : 9830006376
टाटानगर	दिनांक : 7 जुलाई	संपर्क : 9830006376
मुझफ्फरपुर	दिनांक : 2 अगस्त	संपर्क : 9608030142
अमरावती	दिनांक : 2 अगस्त	संपर्क : 9403411471
वैशाली	दिनांक : 3-4 अगस्त	संपर्क : 9708234981
बख्तियारपुर	दिनांक : 5 अगस्त	संपर्क : 9470083078
अकोला	दिनांक : 5 अगस्त	संपर्क : 9422403002
मुरतीजापुर	दिनांक : 5 अगस्त	संपर्क : 8975967656
नवादा	दिनांक : 6 अगस्त	संपर्क : 7654057901
गया	दिनांक : 7 अगस्त	संपर्क : 9835623307
पटना	दिनांक : 8-9 अगस्त	संपर्क : 7352723132
आरा	दिनांक : 10 अगस्त	संपर्क : 9934620084
दिल्ली	दिनांक : 11 अगस्त	संपर्क : 9810098564

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

#### पूज्य नीरूमाँ का सत्संग सुनिए रेडियो सीटी 'स्मरण' पर...

हर रविवार सुबह ८ बजे तथा शाम ४ बजे - गुरु-शिष्य का रिश्ता जीवन में होता है खास ( हिन्दी में )

लोग इन करें प्लेनेट रेडियो सीटी 'स्मरण' पर <http://www.planetradiocity.com/smaran>

#### 'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा ( दादा मंदिर ) : 9924343335, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, अमरेली त्रिमंदिर: 9924344460, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

## दादावाणी

**अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में ब्रह्मचर्य शिविर - दि. २-३ जून, २०१५**

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते हैं, उसकी उम्र २१ से ३० के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 9723707737 पर संपर्क करें।

### अडालज त्रिमंदिर में पर्युषण पारायण

१० से १७ सितम्बर (गुरु से गुरु) पर्युषण पारायण - आप्तवाणी ३ तथा १३ (पू.) पर वाचन-सत्संग प्रश्नोत्तरी  
१८ सितम्बर (शुक्र) सुबह ९ बजे से - दर्शन का विशेष कार्यक्रम

पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-३ और १३ (पू.) (गुजराती) किताबों का वाचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते हैं।)

### परम पूज्य दादा भगवान का 108 वाँ जन्मजयंती महोत्सव पूणे शहर में

सत्संग शिविर : दि. २४ से २९ नवम्बर, जन्मजयंती : दि. २५ नवम्बर, ज्ञानविधि : दि. २८ नवम्बर

इस बार जन्मजयंती महोत्सव के दौरान समग्र सत्संग तथा ज्ञानविधि कार्यक्रम हिन्दी में होंगे।

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत
- + 'आस्था' पर सोम से शनि रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
  - + 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
  - + 'दूरदर्शन'-गिरनार पर हर रोज सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
  - + 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
  - + 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)
- USA
- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत
- + 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
  - + 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में)
  - + 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर हर रोज रात ९-३० से १० (हिन्दी में) (नया कार्यक्रम)
  - + 'साधना' पर हर रोज शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
  - + 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
  - + 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
  - + 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- USA
- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST
- UK
- + 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में)
- Singapore
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)
- Australia
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)
- New Zealand
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
- USA-UK-Africa-Aus. + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

#### हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष २०१५

सत्संग शिविर : दि. २८-२९ तथा ३१ मई, समय : सुबह ९ से ११-३०, शाम ४-३० से ७  
दि. ३० मई, समय : सुबह ९ से ११-३०

ज्ञानविधि : दि. ३० मई, दोपहर ४ से ७-३०

तीर्थ यात्रा : दि. १ जून - पूज्यश्री के संग डाकोर तीर्थ, गोधरा त्रिमंदिर, यात्रा चार्ज - रु. 450-नोन ए.सी., रु. 650-ए.सी.

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर में हिस्सा लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना जरूरी है। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

#### गोधरा

दि. १ जून (सोम), शाम ६ से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग तथा २ जून (मंगल), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि

दि. ३ जून (बुध), शाम ६ से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : त्रिमंदिर, एफ.सी.आई. गोडाउन के सामने, भामैया गाँव, गोधरा (गुजरात).

संपर्क : 9825431503

#### पालनपुर

दि. ६ जून (शनि), रात ७-३० से १०-३० - सत्संग तथा ७ जून (रवि), शाम ७ से १०-३० - ज्ञानविधि

दि. ८ जून (सोम), रात ७-३० से १०-३० - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : गायत्री मंदिर के पास, शिवम सेल्स कोर्पोरेशन के सामने, आबु रोड हाईवे, पालनपुर.

संपर्क : 9825280923

दि. ८ जून (सोम) - पूज्यश्री के संग अंबाजी यात्रा (कोई भी महात्मा जुड़ सकते हैं।) संपर्क : (079-39830400)

#### अडालज त्रिमंदिर

दि. २२ अगस्त (शनि), शाम ४-३० से ७ - सत्संग तथा २३ अगस्त (रवि), शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि

दि. २४ अगस्त (सोम), शाम ४-३० से ७ - आप्तपुत्र सत्संग

#### जयपुर

दि. २५ अगस्त (मंगल), शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा २६ अगस्त (बुध), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि

दि. २७ अगस्त (गुरु), शाम ६ से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : उत्सव होल, पी-10, सेक्टर - 2, विद्यानगर, जयपुर (राजस्थान).

संपर्क : 8290333699

#### नागपुर

दि. २८-२९ अगस्त (शुक्र-शनि), शाम ५-३० से ८ - सत्संग तथा ३० अगस्त (रवि), शाम ४-३० से ८ - ज्ञानविधि

दि. ३१ अगस्त (सोम), शाम ५-३० से ८ - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल के लिए संपर्क : 8421680086

#### अमरावती

दि. १ सितम्बर (मंगल), शाम ६-३० से ९ - सत्संग तथा २ सितम्बर (बुध), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि

दि. ३ सितम्बर (गुरु), शाम ६-३० से ९ - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : संत ज्ञानेश्वर सांस्कृतिक भवन, ITI कोलेज के सामने, मोरशी रोड (महाराष्ट्र).

संपर्क : 9422335982

मई 2015  
वर्ष - 10 अंक - 7  
अखंड क्रमांक - 115

## दादावाणी

Date Of Publication On 15<sup>th</sup> Of Every Month  
RNI No. GUJHIN/2005/17258  
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017  
Valid up to 31-12-2017  
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015  
Valid up to 31-12-2017  
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1  
on 15th of each month.

### निमित्त को ही काटकर फिर दोषित देखते रहते हैं

यदि सास दुःख दे रही हो न, तो बहू खुद के दोष नहीं देखती, लेकिन सास की ही गलतियाँ निकालती रहती है। लेकिन यदि वह धर्मध्यान समझे तो क्या करेगी? 'मेरे कर्मों का दोष है, इसलिए मुझे ऐसी सास मिली। मेरी उस सहेली को क्यों अच्छी सास मिली है!' ऐसा विचार नहीं करना चाहिए? तो हम नहीं समझ जाएँ कि अपनी कोई भूल होगी न, नहीं तो ऐसी सास कहाँ से आ मिले? उसे भान ही नहीं है कि यह मेरे कर्म के उदय का फल है। वह तो प्रत्यक्ष को ही देखती है, निमित्त को ही काटने दौड़ती है। सास तो निमित्त है, उसे काटने मत दौड़ना। निमित्त का तो बल्कि हमें उपकार मानना चाहिए कि उसने हमें एक कर्म में से मुक्त करवाया। कर्म से मुक्ति नहीं हुई, और उससे पहले तो सास के दोष देख लेती है, इससे वापस दूसरे नए कर्म बढ़े! सास सताए, तब हर एक बार कर्म से मुक्ति मिलनी चाहिए। सास को निर्दोष देखना चाहिए कि 'सास का भला क्या दोष? और यदि सास का दोष देखा तो फिर कर्म बढ़ेंगे। फिर उसका तो कोई क्या करे? भगवान भी क्या करें?

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.